आज का सुविचार

मनुष्य का पतन कार्य की अधिकता से नहीं वरन कार्य की अनियमतता से होता है ।
- अज्ञात

दैनिक
इंटीग्रेटेड ट्रेड

आईटीडीसी इंडिया ईप्रेस | 2018 में स्थापित | ITDCNEWS.COM

डेवलपमेंट सेंटर न्यूज

आरएनआई नं.
MPHIN/2018/77221
डाक पंजीयन नं.
MP/BHOPAL/4-504/2020-22

वर्ष-4 अंक-295 भोपाल, सोमवार 6 सितंबर, 2021, पृष्ठ-8, मूल्य-3 रुपए

ITDC
पंचांग

भाद्रपद कृष्णा
चतुर्थी, सोमवार
विक्रम, संवत 2078

ITDC
मौसम

सूर्योदय/सूर्यास्त	6:02/6:39
वर्षा/बादल %	15 %
नमी %	91 %
वायु (किमी/घं.)	06
तापमान प्रातः/रात्रि (डिग्री से.)	27°/23°

स्वर्ण दर 24 कैरेट ITDC

प्रति 10 ग्राम/1तौला

₹ 48,630

ममता के भतीजे और टीएमसी महासचिव अभिषेक बनर्जी आज ईडीके सामने पेश होंगे

बंगाल। पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी के भतीजे और ञ्चख्ल्ब महासचिव अभिषेक बनर्जी सोमवार को दिल्ली में श्वष्ठ के सामने पेश होंगे। कोयला तस्करी को लेकर हुई मनी लॉन्ड्रिंग मामले में एजेंसी उनसे पूछताछ करेगी। रिपोर्ट के मुताबिक, आज शाम वो कोलकाता से दिल्ली के लिए रवाना होंगे। अभिषेक की पत्नी रुजिरा बनर्जी को भी एजेंसी ने बुलाया है, लेकिन उन्होंने कोरोना महामारी का हवाला देते हुए अपने घर पर ही पूछताछ करने की अपील की है।

केंद्र ने राज्यों को टीका लगाने से पहले जांच के निर्देश दिए

बंगाल। देश में कोरोना वायरस महामारी के खिलाफ वैक्सीनेशन जारी है। केंद्र सरकार ने राज्यों को चिट्ठी लिखकर कहा है कि कोरोना वैक्सीन लगाने से पहले इसकी जांच कर ली जाए कि कहीं वो नकली तो नहीं है। स्वास्थ्य मंत्रालय ने राज्यों को असली वैक्सीन की पहचान के लिए एक खाका बनाकर भेजा है। इसके जरिए वैक्सीन की सत्यता का पता लगाया जा सकता है। इसमें कोविशील्ड, कोवैक्सिन और स्पुतनिक V तीनों वैक्सीन पर लेबल, उसके कलर, ब्रांड का नाम क्या होता है, इसकी जानकारी दी गई है।

अयोध्या में राम मंदिर की नींव का काम लगभग पूरा

नईअ्दिल्ली। श्री राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट के अधिकारियों ने बताया कि अयोध्या में राम मंदिर की नींव का काम लगभग पूरा हो गया है। मंदिर का वास्तविक निर्माण कार्य एक हफ्ते में शुरू हो जाएगा। निर्माण कार्य में तेजी लाने और इसमें इस्तेमाल होने वाले पत्थरों की आवश्यकता को पूरा करने के लिए जयपुर से आठ शिल्पकार पहले ही अयोध्या पहुंच चुके हैं।

कोरोना महामारी के साथ केरल में अब निपाह का खतरा कोझिकोड में निपाह वायरस से 12 साल के बच्चे की मौत

राज्य में 2 साल बाद लौटा ये वायरस

आईटीडीसी इंडिया ई-प्रेस/ आईटीडीसी न्यूज नईअ्दिल्ली

केरल के कोझिकोड में रविवार सुबह निपाह वायरस के चलते एक 12 साल के लड़के की मौत हो गई। पीड़ित का यहां के एक निजी अस्पताल में इलाज चल रहा था। मरीज के रिश्तेदारों और उसके इलाज में जितने लोग शामिल थे, उन सभी को क्वारैंटाइन कर दिया गया है। इनमें से अभी तक किसी और में संक्रमण के लक्षण नहीं दिखे हैं। राज्य की स्वास्थ्य मंत्री वीणा जॉर्ज हालात का जायजा लेने के लिए रविवार सुबह कोझिकोड के लिए रवाना हुईं। जॉर्ज ने कहा कि हमने स्थिति को संभालने के लिए टीमें गठित कर दी हैं। कॉन्टैक्ट ट्रेसिंग और दूसरे उपाय पहले ही शुरू कर दिए गए हैं। फिलहाल घबराने की जरूरत नहीं है, लेकिन हमें सावधानी बरतनी होगी।

केंद्र ने राज्य सरकार को जरूरी कदम उठाने के निर्देश दिए

केंद्र ने भी एक टीम केरल भेजी है। साथ ही राज्य सरकार को तत्काल सार्वजनिक स्वास्थ्य उपायों को अपनाने की सलाह दी है। केंद्र की ओर से कहा गया है कि राज्य में पिछले 12 दिनों के दौरान पीड़ित के संपर्क में आने वालों की जांच की जाए। ऐसे लोगों को क्वारैंटाइन किया जाए और अधिक से अधिक लोगों के सैंपल कलेक्ट करके उसकी टेस्टिंग करवाएं।

शनिवार देर रात स्वास्थ्य अधिकारियों की हाई लेवल मीटिंग:- निपाह संक्रमण की जानकारी मिलने के बाद राज्य सरकार ने शनिवार देर रात स्वास्थ्य अधिकारियों की हाई लेवल मीटिंग बुलाई। पर्यटन मंत्री पीए मुहम्मद रियास ने बताया कि बैठक में एक एक्शन प्लान तैयार किया गया। हमारे पास 2018 का अनुभव है। हमने स्वास्थ्य मंत्री के साथ देर रात बैठक की और उन सभी पहलुओं पर चर्चा की, जिन पर तुरंत कार्रवाई करने की जरूरत है। केरल में इससे पहले निपाह वायरस का मामला 2019 में कोच्चि से सामने आया था। 2018 में कोझीकोड और मलप्पुरम जिले में इसके संक्रमण से 17 लोगों की मौत हुई थी। निपाह एक जूनोटिक वायरस है और यह चमगादड़ व सूअर जैसे जानवरों से इंसानों में फैल सकता है।

तालिबानी हुकूमत : अमेरिकी जनरल ने कहा-

अफगानिस्तान में गृह युद्ध छिड़ सकता है

रेजिस्टेंस फोर्स का दावा- 600 तालिबानी मार गिराए

आईटीडीसी इंडिया ई-प्रेस/ आईटीडीसी न्यूज नईअ्दिल्ली

अफगानिस्तान के मौजूदा हालात को देखते हुए अमेरिकी सेना के जनरल मार्क मिल्ले ने कहा है कि अफगानिस्तान में गृह युद्ध छिड़ सकता है और आतंकी संगठन फिर से सिर उठा सकते हैं। अल-कायदा फिर से संगठित हो सकता है, ISIS और दूसरे आतंकी संगठनों की गतिविधियां भी बढ़ सकती हैं।

रेजिस्टेंस फोर्स का दावा- 600 तालिबानियों को मार गिराया

पंजशीर में तालिबान और रेजिस्टेंस फोर्स के बीच जंग जारी है। इस बीच रेजिस्टेंस फोर्स ने दावा किया है कि शनिवार को उसने 600 तालिबानियों को मार गिराया और 1000 तालिबानियों ने या तो सरेंडर कर दिया या उन्हें पकड़ लिया गया। वहीं अल जजीरा की एक रिपोर्ट के मुताबिक तालिबान का कहना है कि पंजशीर की राजधानी बाजारक और प्रांतीय गवर्नर के परिसर की ओर जाने वाली सड़कों पर लैंडमाइन होने की वजह से वे आगे नहीं बढ़ पा रहे हैं। तालिबान का दावा है कि उसने पंजशीर में अपना अभियान लगभग पूरा कर लिया है। फिलहाल एक जिला और पंजशीर की राजधानी ही उसके कंट्रोल से बाहर है। तालिबान ने पंजशीर के कुछ प्रमुख कमांडर्स को मारने का दावा भी किया है।

अमरुल्लाह सालेह बोले- तालिबान को ISI चला रहा

अफगानिस्तान के पूर्व उप-राष्ट्रपति और रेजिस्टेंस फोर्स की अगुवाई कर रहे अमरुल्लाह सालेह ने पाकिस्तान को लेकर बड़ा दावा किया है। ब्रिटिश अखबार डेली मेल के लिए लिखे आर्टिकल में सालेह ने कहा है कि तालिबान को पाकिस्तान की कुख्यात खुफिया एजेंसी ढ्ढस्ढ्ढ चला रही है और तालिबानी प्रवक्ता को पाकिस्तानी दूतावास से हर घंटे निर्देश मिल रहे हैं।

2-3 दिन में नई सरकार का ऐलान हो सकता है : तालिबान

अफगानिस्तान में सत्ता को लेकर तालिबान और हक्कानी नेटवर्क में लड़ाई छिड़ने की रिपोर्ट है। अफगानिस्तान की वेबसाइट %पंजशीर ऑब्जर्वर% के मुताबिक हक्कानी नेटवर्क की फायरिंग में तालिबान का को-फाउंडर मुल्ला बरादर घायल हो गया है। रिपोर्ट में ये भी कहा गया है कि बरादर का इस समय पाकिस्तान में इलाज चल रहा है। हालांकि इसकी पुष्टि नहीं हो पाई है। दूसरी भास्कर के सूत्रों ने बरादर के घायल होने की रिपोर्ट को आधारहीन बताया है। तालिबान का कहना है कि 2-3 दिन में नई सरकार का ऐलान किया जा सकता है। इसके लिए पंजशीर के पूरी तरह कब्जे में आने का इंतजार किया जा रहा है।

हाईकोर्ट के जजों की बहाली पर बोले सीजेआई

82 जजों की बहाली की सिफारिश की है, उम्मीद है सरकार इसमें भी जल्दी करेगी

आईटीडीसी इंडिया ई-प्रेस/ आईटीडीसी न्यूज नईअ्दिल्ली

सुप्रीम कोर्ट के चीफ जस्टिस एनवी रमना ने कहा कि देश के विभिन्न हाई कोर्ट में जजों की बहाली के लिए 82 नामों की सिफारिश कर दी गई है। उम्मीद है कि केंद्र सरकार इसमें भी जल्दी करेगी। हाई कोर्टों में जजों के खाली पदों को भरना उनकी पहली प्राथमिकता है। उन्होंने कहा कि पिछले दिनों सुप्रीम कोर्ट में एक साथ 9 जजों की बहाली जितनी जल्दी की गई वह एक रिकॉर्ड है और इसके लिए वे प्रधानमंत्री और केंद्रीय विधि मंत्री के आभारी हैं। चीफ जस्टिस रमना शनिवार को बार काउंसिल ऑफ इंडिया की ओर से अपने सम्मान में आयोजित समारोह में बोल रहे थे। इस अवसर पर सुप्रीम कोर्ट के 9 जजों के अलावा केंद्रीय विधि मंत्री किरण रिजिजू, सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता और बिहार समेत देश भर से आए बार काउंसिल तथा बार एसोसिएशन के सदस्य भी उपस्थित रहे। सीजेआई ने कहा कि वे वकीलों की समस्याओं से पूरी तरह अवगत हैं क्योंकि जज बनने के पहले वे भी वकील थे।

मप्र में प्रिंसिपल के शर्मनाक बोल- छात्राएं यूनिफॉर्म में नहीं आईं तो कहा-

कल से बिना कपड़ों के ही आ जाना पॉक्सो एक्ट के तहत मामला दर्ज

आईटीडीसी इंडिया ई-प्रेस/ आईटीडीसी न्यूज भोपाल

मध्य प्रदेश के राजगढ़ में शिक्षक दिवस से एक दिन पहले की घटना ने शिक्षक की गरिमा को शर्मसार कर दिया। सरकारी स्कूल की कुछ छात्राओं के स्कूल ड्रेस में नहीं पहुंचने पर प्रिंसिपल भड़क गए। आरोप हैं कि प्रिंसिपल ने यहां तक कह दिया कि कल से बिना कपड़ों के ही स्कूल आ जाना, लड़कों को तुम ही बिगाड़ रही हो। प्रिंसिपल की इस शर्मिंदा करने वाली बात से भड़के छात्र-छात्राओं ने स्कूल से लेकर थाने तक रैली निकाली और शिकायत दर्ज करवाई। पुलिस ने रविवार को एफआईआर दर्ज कर आरोपी प्रिंसिपल राधेश्याम मालवीय के खिलाफ पॉक्सो एक्ट के तहत मामला दर्ज किया है। आरोपी प्रिंसिपल अभी फरार हैं और शिक्षा विभाग ने उसे सस्पेंड कर दिया है। मामला राजगढ़ जिले के माचलपुर हायर सेकेंडरी स्कूल का है।

यहां 11वीं और 12वीं की छात्राएं स्कूल यूनिफॉर्म पहनकर नहीं पहुंचीं थीं। इस पर प्रिंसिपल राधेश्याम मालवीय ने टोकते हुए कहा कि यूनिफॉर्म पहनकर आएं। छात्राओं ने कहा कि यूनिफॉर्म सिल नहीं पाई है। इस पर प्रिंसिपल भड़क गए।

पेरेंट्स पहुंचे तो मुकर गए

मामले की जानकारी मिलते ही लड़कियों के परिवार वाले स्कूल पहुंच गए। उन्होंने प्रिंसिपल से बात की तो वह अपने बयान से मुकर गए और कहा कि लड़कियों से सिर्फ ड्रेन पहनकर आने को कहा था।

दैनिक इंटीग्रेटेड ट्रेड
डेवलपमेंट सेंटर न्यूज
98 26 22 00 22

अर्थव्यवस्था, शिक्षा, नियोजन, उद्भव, पर्यावरण, मनोरंजन.

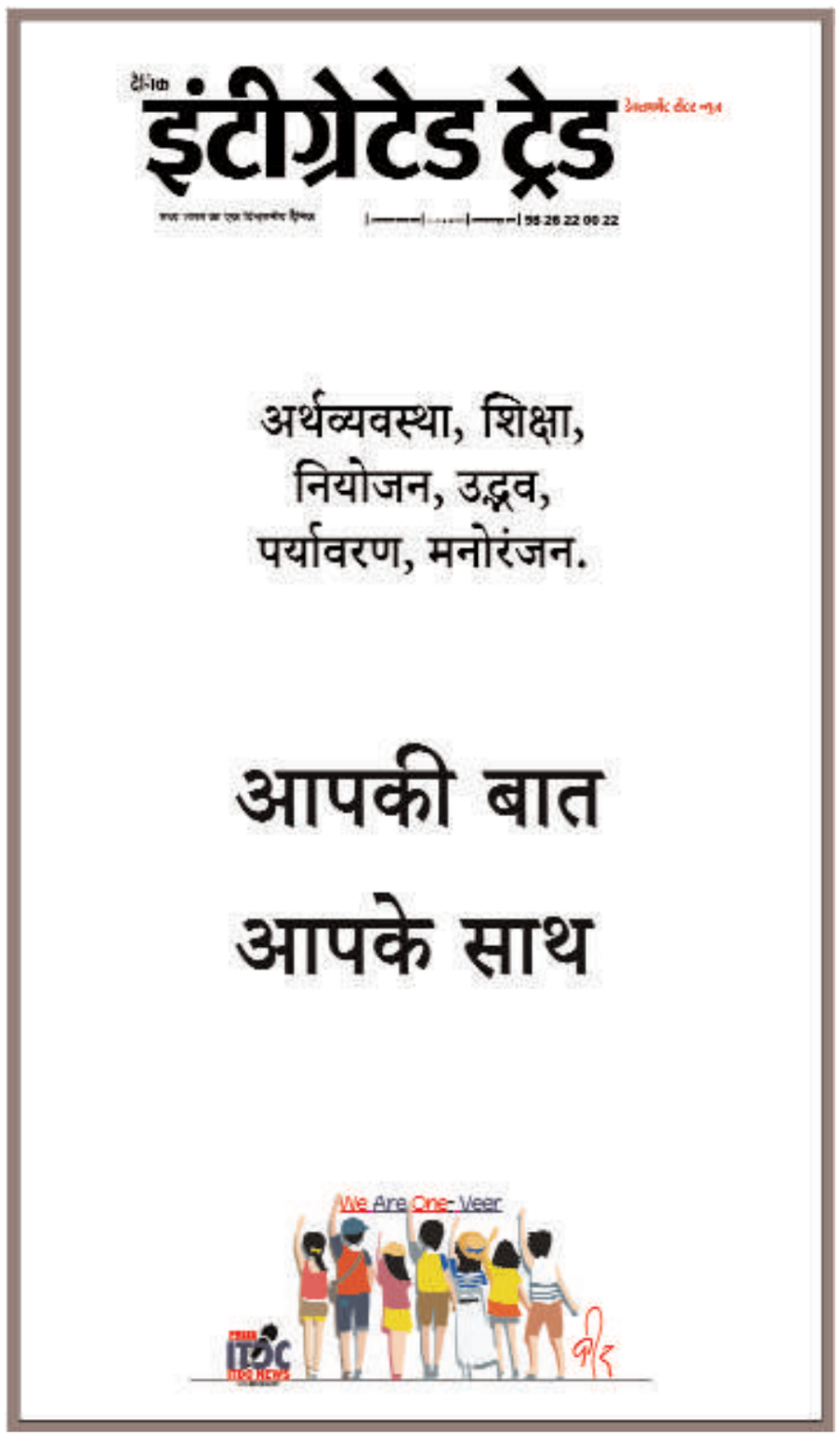

आपकी बात आपके साथ

आरएसएस की तालिबान से तुलना कर घिरे जावेद अख्तर

मुंबई में घर के सामने भाजपा का प्रदर्शन, भाजपा विधायक बोले- फिल्मों की स्क्रीनिंग नहीं होने देंगे

आईटीडीसी इंडिया ई-प्रेस/ आईटीडीसी न्यूज नईअ्दिल्ली

अफगानिस्तान की सत्ता पर काबिज कुख्यात संगठन तालिबान की तुलना राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और विश्व हिंदू परिषद से करना जावेद अख्तर को भारी पड़ता दिख रहा है। भाजपा कार्यकर्ता मुंबई में स्थित उनके घर के सामने लगातार विरोध प्रदर्शन कर रह हैं। BJP के कुछ कार्यकर्ताओं ने उनका पुतला भी फूंकने भी की। इसमें उनकी पुलिस के साथ झड़प भी हुई। इधर, भाजपा विधायक राम कदम ने कहा है कि जावेद अख्तर की किसी भी फिल्म की भारत में तब तक स्क्रीनिंग नहीं होने देंगे, जब तक कि वह हाथ जोड़कर माफी नहीं मांग लेते। कदम ने कहा कि अख्तर का बयान न सिर्फ शर्मनाक है, बल्कि संघ और विश्व हिन्दू परिषद के करोड़ों समर्थकों और उस विचारधारा को मानने वाले करोड़ों लोगों के लिए पीड़ादायक और अपमानजनक है। उन्होंने हाल ही में कहा था कि जैसे तालिबान इस्लामिक स्टेट चाहता है, वैसे ही कुछ लोग हिंदू राष्ट्र चाहते हैं।

जावेद अख्तर ने इंटरव्यू के दौरान कही ये बात

जावेद अख्तर ने एक इंटरव्यू के दौरान कहा था कि RSS का समर्थन करने वाले लोगों की मानसिकता भी तालिबान जैसी है। जो लोग RSS का समर्थन करते हैं, उन्हें खुद की जांच करानी चाहिए। उन्होंने आगे कहा था कि जिस संगठन का आप समर्थन कर रहे हैं, उसमें और तालिबान में कोई फर्क नहीं है। वे टारगेट की तरफ बढ़ते जा रहे हैं और उनकी जमीन भी मजबूत होती जा रही है।

कंगना रनोट पर अख्तर ने किया है मानहानि का केस

जावेद अख्तर ने मानहानि का एक केस कंगना रनोट के खिलाफ लगा रखा है। इस मामले में मुंबई की कोर्ट ने मार्च 2020 में कंगना के खिलाफ जमानती वारंट भी जारी किया था, लेकिन एक्ट्रेस ने जमानत ले ली थी। कंगना ने आरोप लगाया था कि जावेद आधारहीन आरोप लगाकर उनका नाम खराब करने की कोशिश कर रहे थे। दरअसल अभिनेत्री को समन भेजे जाने के बावजूद कोर्ट में उपस्थित नहीं होने की वजह से कोर्ट ने वारंट जारी किया था।

भारत की शिक्षा व्यवस्था के आदर्श मूल्य और संस्कार के वाहक है शिक्षक : परमार

» राज्य स्तरीय शिक्षक समारोह में उत्कृष्ट कार्य करने वाले 27 शिक्षक हुए सम्मानित

आईटीडीसी इंडिया ई-प्रेस/ आईटीडीसी न्यूज भोपाल

स्कूल शिक्षा (स्वतंत्र प्रभार) और सामान्य प्रशासन राज्य मंत्री श्री इंदर सिंह परमार ने कहा कि शिक्षक भारत की शिक्षा व्यवस्था के आदर्श, मूल्य और संस्कार के वाहक हैं। शिक्षक भारत की सनातन परंपरा का पालन करते हुए विद्यार्थियों को पढ़ाने लिखाने तक सीमित न होकर, उन्हें अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाने वाले और जीवन में सकारात्मक बदलाव लाने वाला एक व्यक्तित्व है। श्री परमार वल्लभ भवन में वर्चुअली ऑनलाइन आयोजित राज्य स्तरीय शिक्षक सम्मान समारोह में शिक्षण क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने वाले शिक्षकों को सम्मानित कर रहे थे। श्री परमार ने शिक्षकों का उत्साह बढ़ाते हुए कहा कि शिक्षक बच्चों के भविष्य को आकार देते है और इस तरह राष्ट्र के भावी भविष्य का निर्माण करते है। इस नेक योगदान के कारण ही शिक्षक समाज के सबसे ज्यादा सम्मानित सदस्य हैं। प्रदेश के विभिन्न जिलों से 27 शिक्षकों का सम्मान करते हुए श्री परमार ने कहा कि यह सम्मान प्रदेश के हर शिक्षक और शिक्षा व्यवस्था से जुड़े हर अधिकारी-कर्मचारी का सम्मान है। श्री परमार ने भोपाल जिले की शिक्षिका श्रीमती वंदना पांडे को मंत्रालय में सम्मानित करते हुए प्रदेश के विभिन्न जिलों के एनआईसी कक्षा से जुड़े शिक्षकों को शाल, श्रीफल, प्रशस्ति पत्र और 25 हज़ार रुपये की सम्मान राशि से सम्मानित किया।

राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार से सम्मानित शिक्षक का किया सम्मान

श्री परमार ने राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार से सम्मानित मंडला जिले के बिछिया विकासखंड के शासकीय हाई स्कूल मांद के माध्यमिक शिक्षक श्री शक्ति पटेल को सम्मानित किया। श्री परमार ने उन्हें शाल, श्रीफल, प्रशस्ति पत्र और राज्य शासन की ओर से 11 हज़ार रुपये की सम्मान राशि का चेक भेंट किया।

डॉ. राधाकृष्णन के मूल्यों और आदर्शों के लिए प्रदेश के शिक्षक समर्पित

» शिक्षकों ने दृढ़ता पूर्वक किया कोरोना की चुनौतियों का सामना

आईटीडीसी इंडिया ई-प्रेस/ आईटीडीसी न्यूज भोपाल

मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा कि शिक्षा का मुख्य उद्देश्य नई पीढ़ी को ज्ञान, कौशल और संस्कार देना है। शिक्षक दिवस के रूप में आज का दिन भारत के पूर्व राष्ट्रपति, प्रख्यात शिक्षाविद डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन को समर्पित है। डॉ. राधाकृष्णन शिक्षा और ज्ञान को जीवन का सबसे सशक्त आधार मानते थे। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने शिक्षक दिवस पर अपने ट्वीट में लिखा है कि डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन जी के सपनों के शिक्षित, समर्थ और सशक्त भारत के निर्माण में मध्यप्रदेश अपना हरसंभव योगदान देने के लिए संकल्पित है। डॉ. राधाकृष्णन का मत था कि शिक्षक वह नहीं जो छात्र के दिमाग में तथ्यों को जबरन ठूसे, बल्कि वास्तविक शिक्षक तो वह है, जो उसे आने वाले कल की चुनौतियों के लिए तैयार करे। वास्तव में समाज को गढ़ने का कार्य शिक्षक ही करते हैं।

अपने कर्त्तव्य के प्रति प्रतिबद्ध रहे शिक्षक

प्रदेश में शालेय शिक्षक न केवल आने वाली पीढ़ी को चुनौतियों के लिए तैयार कर रहे हैं, अपितु स्वयं भी चुनौतियों का दृढ़ता पूर्वक सामना कर रहे हैं। कोरोना संक्रमण ने शालेय शिक्षा व्यवस्था को झकझोर कर रख दिया था। बच्चों के एक साथ होने, सीखने, खेलने-कूदने, अन्य पाठ्येत्तर गतिविधियों और परस्पर आपसी संवाद से ही स्कूल नामक संस्था जीवंत थी और उसकी पहचान थी। वहाँ का आनंद एवं बच्चों में स्कूल के लिए रूचि इन्हीं कारणों से थी। कोरोना ने इन सब गतिविधियों को संक्रमण फैलने का कारण बना दिया। परिणामस्वरूप स्कूल लंबे समय तक बंद रहे। इस विपरीत परिस्थिति में भी विद्यार्थियों को ज्ञान- कौशल और संस्कार प्रदान करने के अपने कर्त्तव्य के प्रति शिक्षक प्रतिबद्ध रहे। शिक्षकों के इन प्रयासों के परिणामस्वरूप विद्यार्थियों के अध्ययन का क्रम नहीं टूटा और वे शिक्षा में निरंतरता अनुभव करते रहे।

शिक्षकों ने ऑनलाइन कक्षाएँ लेने के साथ कोरोना ग्रस्त लोगों की मदद भी की:- प्रदेश के गुरूजन ने कोविड संक्रमण के दौरान दीक्षा, डिजिलेप, दूरदर्शन, रेडियो, व्हाटएप आदि माध्यमों से ऑनलाइन कक्षाओं का संचालन कर शिक्षा व्यवस्था का संचालन किया। हमारा घर-हमारा विद्यालय जैसी योजनाओं के माध्यम से विद्यार्थियों तक निरंतर शिक्षा की पहुँच बनाए रखी। शिक्षा के साथ शिक्षकों ने कोरोना से ग्रसित लोगों के सर्वेक्षण, उनकी चिकित्सा तथा टीकाकरण मे सहयोग जैसे कार्य भी किये।

ऑनलाइन कक्षाओं की व्यवस्था:- कोविड-19 की स्थिति के दृष्टिगत विद्यार्थियों की शिक्षा न रूके इसके लिए विगत वर्ष से ही प्रतिदिन ऑनलाइन कक्षाएँ संचालित की जा रही हैं। डिजिटल लर्निंग एन्हांसमेंट प्रोग्राम (डिजीलेप) के माध्यम से कक्षा 1 से 12 के विद्यार्थियों के लिए व्हाट्सएप से शिक्षण सामग्री साझा की गई।

न्यूज ब्रीफ

लव-कुश जन्मोत्सव समारोह में शामिल हुए परिवहन मंत्री राजपूत

भोपाल। परिवहन एवं राजस्व मंत्री श्री गोविंद सिंह राजपूत लव-कुश जयंती के अवसर पर शनिवार को सागर के जैसीनगर में आयोजित समारोह में शामिल हुए। लव-कुश जन्मोत्सव के अवसर पर मंत्री श्री राजपूत ने कहा कि लव-कुश भगवान श्रीराम-सीता के जुड़वा बेटे थे। लव ने लवपुरी नगर की स्थापना की थी, जो वर्तमान में लाहौर में स्थित है। यहाँ एक किले में लव का मंदिर भी बना हुआ है। दक्षिण कौशल प्रदेश, जो आज छत्तीसगढ़ में स्थित है, में कुश का अभिषेक किया गया। मंत्री श्री राजपूत ने कहा कि आज के युवाओं को भगवान श्रीराम के बताये हुए मार्ग पर चलना चाहिये। जन्मोत्सव के अवसर पर शहर में शोभा-यात्रा निकाली गई, जो जैसीनगर के मुख्य मार्ग से होते हुए कार्यक्रम स्थल तक पहुँची। इस अवसर पर अखाड़े, भजन-मण्डलियों में श्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले कलाकारों तथा समाज के वरिष्ठ पदाधिकारी एवं समाज-सेवियों को सम्मानित किया गया। इस अवसर पर शहर के श्रद्धालुओं और भक्तजनों ने बड़ी संख्या में उपस्थित होकर जन्मोत्सव में भाग लिया।

प्रधानमंत्री उज्जवला 2.0 योजना में अतिरिक्त एक करोड़ गैस कनेक्शन होगे जारी

भोपाल। प्रधानमंत्री उज्जवला 2.0 योजना के अंतर्गत देश के एक करोड़ निर्धन परिवारों को निःशुल्क गैस कनेक्शन प्रदाय किये जायेंगे। योजना में मध्यप्रदेश के 9 लाख निर्धन परिवार भी लाभान्वित होंगे। प्रमुख सचिव खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति तथा उपभोक्ता संरक्षण श्री फैज अहमद किदवई ने बताया कि योजना के अंतर्गत नवीन गैस कनेक्शन जारी किये जाने पर समस्त पात्र हितग्राहियों को डिपॉजिट फ्री गैस कनेक्शन मिलेंगे। इसके साथ ही प्रथम रिफिल एवं गैस चूल्हा (हॉट-प्लेट) भी निःशुल्क दिया जायेगा। प्रमुख सचिव श्री किदवई ने बताया ?कि उज्जवला योजना के अंतर्गत ऐसी वयस्क महिला गैस कनेक्शन प्राप्त करने के लिये पात्र होंगी, जो गरीब गृहस्थी से संबंध रखती हैं एवं जिनकी गृहस्थी में किसी भी प्रकार का गैस कनेक्शन पहले से उपलब्ध नहीं है।

भावी पीढ़ी निर्माण के केन्द्र आँगनवाड़ी और प्राथमिक विद्यालय : श्री पटेल

मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य के प्रति जन-जागृति बढ़ाने के प्रयासों को व्यापकता दें

» बालक-बालिकाओं को शौर्य पुरस्कारों से सम्मानित करने की करें पहल

» राज्यपाल श्री पटेल ने म.प्र. बाल-कल्याण परिषद को दिये निर्देश

आईटीडीसी इंडिया ई-प्रेस/ आईटीडीसी न्यूज भोपाल

राज्यपाल श्री मंगुभाई पटेल ने कहा है कि भावी पीढ़ी निर्माण के केन्द्र आँगनवाड़ी और प्राथमिक विद्यालय होते हैं। जरूरी है कि आँगनबाड़ी कार्यकर्ता और सहायिका आम बोल-चाल की भाषा में मातृ-शिशु स्वास्थ्य के प्रति जागृति बढ़ाएँ। बच्चों में अच्छी आदतें डालने के लिए प्रेरित और प्रशिक्षित करें। राज्यपाल श्री पटेल मध्यप्रदेश बाल-कल्याण परिषद की वर्चुअल बैठक को आज राजभवन से संबोधित कर रहे थे। बैठक में परिषद के उपाध्यगण, पदाधिकारी और कार्यकारिणी के सदस्य मौजूद थे। राज्यपाल श्री मंगुभाई पटेल ने परिषद को बालक-बालिकाओं को शौर्य पुरस्कारों से सम्मानित करने की पहल करने के लिए कहा है। उन्होंने बच्चों की प्रतिभा को प्रदर्शन के अवसर उपलब्ध कराने के प्रयासों की जरुरत बताई। कहा कि बच्चों में असीम सम्भावनाएँ छुपी होती है। उन्हें निखारने और उचित दिशा-दर्शन की जरुरत है। इस कार्य में आँगनबाड़ी कार्यकर्ता, सहायिका और प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। उन्होंने एक प्रसंग के माध्यम से बताया कि गुजरात के कच्छ इलाके के एक शिक्षक दंपत्ति ने बिना विशेष साधन और संसाधन के विद्यालय के 350 बच्चों में पर्यावरण संरक्षण के संस्कार डालने के साथ ही पेड़ों से विद्यालय की चाहर दीवारी का निर्माण कर लिया था। उन्होंने बताया कि शिक्षक दंपत्ति ने विद्यालय के बच्चों से स्कूल की सीमा पर एक पौधा लगवा कर कहा कि यह पौधा आपका है। इसकी देखभाल आपकी जिम्मेदारी है। पौधें को पानी देने के लिए उनसे घर में सब्जी धोने के बाद बचें पानी को पात्र में एकत्र कर, उसके द्वारा स्कूल में लगाए गए पौधे में डलवाया। उनके इस कार्य ने स्कूल के चारों ओर हरियाली की दीवार खड़ी कर दी। उन्होंने कहा कि कोविड काल ने ऑक्सीजन और ऑक्सीजन के लिए पेड़ों की महत्ता का सबक दिया है। पेड़ लगाने और उसकी देखभाल के संबंध में जन-जागृति के कार्य व्यापक स्तर किए जाने चाहिए। राज्यपाल श्री पटेल ने कहा कि बच्चों के खराब स्वास्थ्य को नियति मान कर बैठे रहने की प्रवृत्ति उचित नहीं है। उसे बदलने के प्रयास किए जाने चाहिए। बच्चों के खराब स्वास्थ्य का कारण कुपोषण और माता द्वारा स्तनपान नहीं कराया जाना होते हैं। अच्छे स्वास्थ्य के लिए कुपोषण की समस्या को खत्म करना जरुरी है। बच्चों के लिए पोषण आहार के साथ माता का दूध भी जरुरी है। स्तनपान में चूक से बच्चें का स्वास्थ्य बिगड़ जाता है। इस संबंध में जन-जागृति के प्रयास किए जाना जरुरी हैं। उन्होंने कहा कि स्वस्थ्य समाज के लिए सबका साथ सबका विकास और विश्वास के साथ कार्य करना जरुरी है। समाज और समाज सेवी संस्थाओं की यह जिम्मेदारी है कि वह समाज के वंचित वर्गों के साथ जीवंत संवाद कायम करें। उनको जागरुक बनाए। राज्यपाल श्री पटेल ने कहा कि कोविड आपदा सदी की सबसे बड़ी त्रासदी है। कोविड से बचाव के लिए यह समझना और समझाना जरुरी है कि जान है तो ही जहान है। इसलिए जब तक बहुत जरुरी नहीं हो, घर से बाहर नहीं निकलें। कम से कम दो गज की दूरी बनाकर मिलें और बार-बार हाथ साबुन से धोएँ और सेनिटाइजर का उपयोग करें। उन्होंने कहा कि विशेषज्ञ तीसरी लहर की आशंका बता रहे हैं। प्रार्थना है कि तीसरी लहर नहीं आए किन्तु सावधानी में कोई कमी नहीं होनी चाहिए।

मुख्यमंत्री ने शिक्षक दिवस पर डॉ. राधाकृष्णन का किया स्मरण

माल्यार्पण कर नमन किया

आईटीडीसी इंडिया ई-प्रेस/ आईटीडीसी न्यूज भोपाल

मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने भारत के पूर्व राष्ट्रपति, प्रख्यात शिक्षाविद और दार्शनिक डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन की जयंती पर उन्हें नमन किया। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने मुख्यमंत्री निवास के सभागार में डॉ. राधाकृष्णन के चित्र पर माल्यार्पण किया। डॉ. राधाकृष्णन का जन्म दिवस भारत में शिक्षक दिवस के रूप में मनाया जाता है। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने सर्वपल्ली राधाकृष्णन के कथन को ट् वीट किया है कि शिक्षक वह नहीं जो छात्र के दिमाग में तथ्यों को जबरन ठूसे, बल्कि वास्तविक शिक्षक तो वह है, जो उसे आने वाले कल की चुनौतियों के लिए तैयार करे। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा है कि शिक्षा और ज्ञान को जीवन का सबसे सशक्त आधार मानने वाले भारतीय संस्कृति के संवाहक डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन जी के सपनों के शिक्षित, समर्थ और सशक्त भारत के निर्माण में मध्यप्रदेश अपना हर संभव योगदान देने के लिए संकल्पित है।

मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान से अन्य पिछड़ा वर्ग के विभिन्न संगठनों के प्रतिनिधियों ने आज निवास पर भेंट की।

अब तक 3236 ग्राम,25 हजार आँगनवाडी और 43 हजार स्कूल में नल से जल पहुँचा

म.प्र. में जल जीवन मिशन में तेजी से काम जारी

आईटीडीसी इंडिया ई-प्रेस/ आईटीडीसी न्यूज भोपाल

मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा है कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के आत्म-निर्भर भारत के मूल मंत्र पर मध्यप्रदेश में तेजी से काम किया जा रहा है। प्रदेश के हर वर्ग की चिंता कर उसकी जरूरतों की पूर्ति के लिए योजनाएँ बना कर मैदानी स्तर पर अमलीजामा पहनाया जा रहा है। इन्हीं योजनाओं में एक महती योजना जल जीवन मिशन भी है, जिसके माध्यम से हर घर में नल से शुद्ध जल देना सुनिश्चित किया जा रहा है। मिशन के क्रियान्वयन से अब तक प्रदेश के 3236 ग्रामों में हर घर में सरल, सुगम और शुद्ध पेयजल की व्यवस्था की जा चुकी है। इस काम को सभी जिलों में तेजी से अंजाम दिया जा रहा है। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने ग्रामीण आबादी, विशेषकर महिलाओं जिन्हें पेयजल के लिए सिर पर मटका रख कर लंबी दूरी तय करना पड़ती थी, को परेशानियों से निजात दिलाने के लिए 15 अगस्त 2019 को जल मिशन की घोषणा की। आज यह मिशन ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाली महिलाओं के लिए वरदान साबित हो रहा है। अब महिलाओं को घर पर ही नल के माध्यम से पेयजल मिलने लगा है। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि जल के बिना जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। प्रकृति ने हमें नदी और तालाब जैसे पेयजल स्रोत दिये। कुओं से भी हमने पेयजल प्राप्त किया है। समय के साथ हमने नलकूप और हेंडपम्प स्थापित कर भू-जल का उपयोग पेयजल के लिए किया। इससे हमारी आधी-आबादी के परिश्रम में कुछ कमी तो आई लेकिन उन्हें पेयजल की समस्या से पूरी तरह मुक्ति नहीं मिल सकी। जल जीवन मिशन में पेयजल स्रोतों का उपयोग कर और जहाँ पेयजल स्रोत नहीं हैं वहाँ नये स्रोत निर्मित कर ग्रामीण आबादी को नल से जल देकर उनके जीवन में बदलाव लाया जा रहा है। मिशन के प्रारंभिक चरण में सवा 3 हजार से अधिक गाँवों में हम यह बदलाव देख सकते हैं। शीघ्र ही प्रदेश के सभी गाँव में मिशन के जरिये नल से घर-घर पेयजल की उपलब्धता सुनिश्चित होगी। मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा है कि प्रधानमंत्री श्री मोदी के प्राथमिकता वाले इस मिशन के लिए केन्द्र सरकार पर्याप्त मात्रा में आवंटन भी उपलब्ध करवा रही है। मिशन में जून 2020 से गाँवों के हर घर में नल कनेक्शन से जल उपलब्ध करवाने का सिलसिला प्रारम्भ हुआ। आज 40 लाख 56 हजार 391 ग्रामीण परिवारों को नल कनेक्शन से निरन्तर जल प्रदाय हो रहा है। मिशन में ग्रामीण आबादी के घरों सहित स्कूल एवं आँगनबाड़ियों में भी पेयजल के लिए नल कनेक्शन दिए जा रहे हैं। लक्ष्य,प्रत्येक ग्रामीण परिवार, आँगनबाड़ी और स्कूल में गुणवत्तापूर्ण और पर्याप्त जल की आपूर्ति सुनिश्चित किया जाना है। अब तक 25 हजार 840 आँगनबाड़ी और 43 हजार 629 स्कूल में नल से पेयजल की व्यवस्था की जा चुकी है।

जल मिशन की उपलब्धि

40,56,391 घरों में नल से जल
3236 ग्रामों में 100 फीसदी नल से जल
43,629 स्कूलों में नल से जल
25,840 आँगनवाड़ियों मे नल से जल

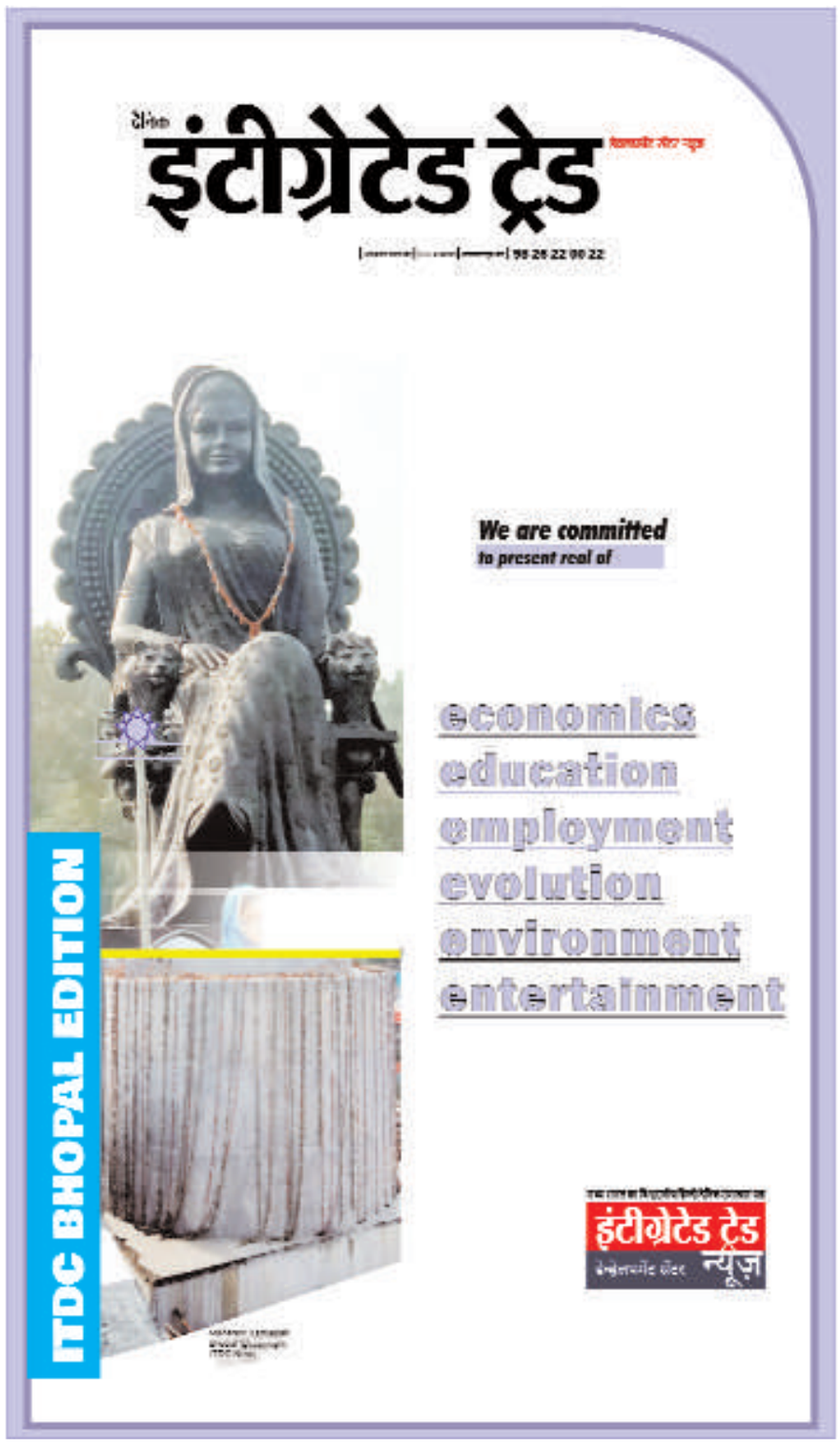

न्यूज ब्रीफ

कोल इंडिया की 39 खनन परियोजनाओं में विलंब : रिपोर्ट

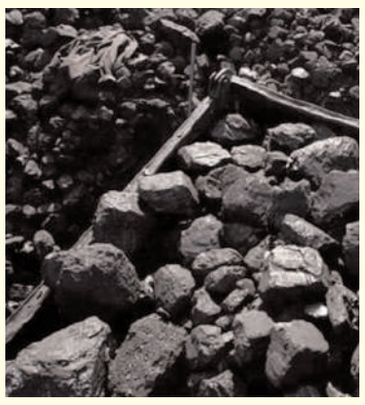

नई दिल्ली। सार्वजनिक क्षेत्र की कंपनी कोल इंडिया लि. (सीआईएल) की 39 कोयला खनन परियोजनाएं विलंब से चल रही हैं। हरित मंजूरियों में देरी, पुनर्वास और पुनर्स्थापन के मुद्दों की वजह से इन परियोजनाओं में देरी हो रही है। खनन परियोजनाओं में देरी का मुद्दा इसलिए महत्वपूर्ण हो जाता है क्योंकि देश के बिजली संयंत्र इस समय कोयले के भंडार में कमी की समस्या से जूझ रहे हैं।
कोल इंडिया की वार्षिक रिपोर्ट में कहा गया है, ''83.64 करोड़ टन सालाना की 114 कोयला परियोजनाओं को मंजूरी दी गई है। इन परियोजनाओं के लिए 1,19,580.62 करोड़ रुपये की पूंजी मंजूर की गई है। इन 114 परियोजनाओं में से 75 तो अपने निर्धारित समय के हिसाब से चल रही हैं, लेकिन 39 परियोजनाएं देरी से चल रही हैं।%% रिपोर्ट में कहा गया है कि मुख्य रूप से वन मंजूरी और जमीन पर कब्जे में देरी तथा पुनर्वास और पुनर्स्थापन के मुद्दों की वजह से इन परियोजनाओं में विलंब हुआ है।
वित्त वर्ष 2020-21 के दौरान कोल इंडिया की 2.76 करोड़ टन की वार्षिक मंजूर क्षमता और 1,976.59 करोड़ रुपये की पूंजी वाली नौ कोयला परियोजनाएं पूरी हुईं। इन परियोजनाओं को कुल 1,958.89 करोड़ रुपये की पूंजी के साथ पूरा किया गया। इनमें से चार परियोजनाएं वेस्टर्न कोलफील्ड्स लि., तीन सेंट्रल कोलफील्ड्स लि. और दो महानदी कोलफील्ड्स लि. की हैं। रिपोर्ट में कहा गया है कि 14 लाख टन की मंजूर क्षमता और 143.63 करोड़ रुपए की पूंजी वाली एक परियोजना से बीते वित्त वर्ष में कोयले का उत्पादन शुरू हुआ। सीआईएल की इकाई साउथ ईस्टर्न कोलफील्ड्स की खनन परियोजना से बीते वित्त वर्ष में उत्पादन शुरू हुआ। घरेलू कोयला उत्पादन में कोल इंडिया की हिस्सेदारी 80 प्रतिशत से अधिक है।

टावर बचाने के लिए स्ट में समीक्षा याचिका दाखिल करेगी सुपरटेक, कहा- बिल्डिंग बाइलॉज के तहत सक्षम अथॉरिटी की मंजूरी ली थी

आईटीडीसी इंडिया ई-प्रेस/ आईटीडीसी न्यूज नई दिल्ली

सुप्रीम कोर्ट ने सुपरटेक के जिस 40 मंजिला ट्विन टावर को गिराने का आदेश पिछले हफ्ते जारी किया था, उसके खिलाफ रियल्टी कंपनी समीक्षा याचिका दाखिल करेगी। कंपनी ने शनिवार को बयान जारी कर कहा कि नोएडा के एमराल्ड कोर्ट प्रोजेक्ट में ट्विन टावर का निर्माण बिल्डिंग बाइलॉज के तहत सक्षम अथॉरिटी की मंजूरी से किया गया है।

सक्षम अथॉरिटी की मंजूरी से बनाया ट्विन टावर:- सुपरटेक के चेयरमैन आर के अरोड़ा ने कहा, हम सुप्रीम कोर्ट के

ऑर्डर का सम्मान करते हैं, लेकिन हमने अदालत में दोबारा समीक्षा याचिका प्रस्तुत करने का निर्णय किया है। ऐसा इसलिए कि दोनों टावर का निर्माण बिल्डिंग बाइलॉज के मुताबिक सक्षम अथॉरिटी की मंजूरी से किया गया है।

ट्विन टावर टोटल पोर्टफोलियो के 0.6% के बराबर:- अरोड़ा ने कहा कि दोनों टावर कंपनी के किसी दूसरे प्रोजेक्ट से जुड़े नहीं हैं और न ही उनका हिस्सा हैं। उन्होंने कहा कि सुपरटेक ग्रुप 10 करोड़ वर्गफुट में रियल एस्टेट प्रोजेक्ट बना रहा है और दोनों टावर सिर्फ 6 लाख वर्ग फुट में बना है जो उसके टोटल पोर्टफोलियो के 0.6% के बराबर है।

तीन महीने में गिराया जाएगा, खर्च कंपनी उठाएगी

सुपरटेक के चेयरमैन ने कहा, हमने इलाहाबाद हाई कोर्ट की तरफ से 2014 में जारी आदेश के बाद इस प्रोजेक्ट के ज्यादातर ग्राहकों का पैसा लौटा दिया है। हम सुप्रीम कोर्ट की तरफ से जारी आदेश का भी पालन करेंगे।% ट्विन टावर को नोएडा अथॉरिटी और किसी एक्सपर्ट एजेंसी की देखरेख में तीन महीने के भीतर गिराया जाना है। इसका पूरा खर्च सुपरटेक उठाएगी।

होम बायर का पैसा 12त्न ब्याज के साथ लौटाएगी

सुप्रीम कोर्ट ने अपने ऑर्डर में सुपरटेक को टावर के होम बायर्स का पूरा पैसा लौटाने के लिए कहा है। कंपनी को उस रकम पर बुकिंग के समय से रिफंड तक 12त्न ब्याज भी देना होगा। कंपनी ट्विन टावर के निर्माण से रेजिडेंट्स को हुई असुविधा के लिए रेजिडेंट्स वेल्फेयर एसोसिएशन को दो करोड़ रुपए भी चुकाएगी।

नोएडा अथॉरिटी की सांठगांठ से बनाया गया ट्विन टावर

सुप्रीम कोर्ट के जस्टिस डी वाई चंद्रचूड़ और जस्टिस एम आर शाह की बेंच ने कहा था कि इलाहाबाद हाई कोर्ट ने ट्विन टावर को ध्वस्त करने का जो आदेश 11 अप्रैल 2014 को दिया था, उसमें दखल देने की कोई जरूरत नहीं। अदालत ने कहा था कि 915 फ्लैट और दुकानों वाले 40 मंजिल के ट्विन टावर को नोएडा अथॉरिटी के कर्मचारियों की सांठगांठ से बनाया गया है।

ऑटो पीएलआई स्कीम का फोकस बदला

सिर्फ ईवी और हाइड्रोजन फ्यूल गाड़ियों के लिए इंसेंटिव दे सकती है सरकार

आईटीडीसी इंडिया ई-प्रेस/ आईटीडीसी न्यूज नई दिल्ली

ऑटो सेक्टर में मैनुफैक्चरिंग को सपोर्ट देने के लिए लगभग 60,000 करोड़ रुपए की जो योजना बनाई गई थी, उसमें सरकार ने बदलाव किया है। मामले के जानकार सूत्रों ने बताया कि सरकार का फोकस अब ग्रीन एनर्जी से चलने वाली गाड़ियों को बढ़ावा देने पर होगा। वह कंपनियों को सिर्फ इलेक्ट्रिक व्हीकल और हाइड्रोजन फ्यूल से चलने वाली गाड़ियां और उसके पार्ट्स बनाने के लिए इंसेंटिव देगी।

पहले समूची ऑटो इंडस्ट्री को इंसेंटिव देना चाहती थी गवर्नमेंट: - सरकार पहले घरेलू खपत और निर्यात के लिए ऑटोमोबाइल और ऑटो पार्ट बनाने वाली कंपनियों को इंसेंटिव देना चाहती थी। उसने उस इनसेंटिव में से कुछ हिस्सा इलेक्ट्रिक व्हीकल (श्रृङ्ख) के लिए तय किया हुआ था। सरकार का फोकस तब बदला है, जब टेस्ला इंडिया में एंट्री करने की तैयारी में है। वह श्रृङ्ख पर इंपोर्ट ड्यूटी में कमी कराने के लिए लॉबिंग कर रही है।

पुरानी टेक्नोलॉजी को बढ़ावा देने पर खर्च नहीं करना चाहती सरकार:- सरकार टेस्ला की रिक्वेस्ट पर विचार कर रही है, लेकिन वह बदले में कुछ चाहती है। वह टेस्ला से यह कमिटमेंट चाहती है कि कंपनी इंडिया में श्रृङ्ख बनाएगी। नए प्रपोजल के मुताबिक, वह इंसेंटिव सिर्फ इलेक्ट्रिक गाड़ियों और हाइड्रोजन फ्यूल से चलने वाली गाड़ियों के निर्माण के लिए ही देगी। सरकार पुरानी टेक्नोलॉजी को बढ़ावा देने पर खर्च नहीं करना चाहती।

क्लीन एनर्जी व्हीकल के कंपोनेंट बनाने के लिए इंसेंटिव दिया जाएगा:- हालांकि ऑटो पार्ट्स कंपनियों को क्लीन एनर्जी व्हीकल के कंपोनेंट बनाने के लिए इंसेंटिव मिलेगा। उन्हें इंसेंटिव सेफ्टी से जुड़े पार्ट्स के अलावा कनेक्टेड कारों के सेंसर और राडार जैसी दूसरी एडवांस टेक्नोलॉजी में निवेश के लिए भी मिलेगा। उन्हें ऑटोमेटिक ट्रांसमिशन, क्रूज कंट्रोल और दूसरे इलेक्ट्रॉनिक्स में पैसा लगाने के लिए भी सपोर्ट दिया जाएगा। सूत्रों के मुताबिक, सरकार का मकसद ऐसी टेक्नोलॉजी को बढ़ावा देना है, जिनका उत्पादन भारत में नहीं हो रहा है, लेकिन उनका इंपोर्ट हो रहा है ताकि उससे रेगुलेटरी जरूरतें पूरी की जा सकें या फिर ग्राहक गाड़ियों में ऐसी फीचर्स मांग रहे हैं। सूत्रों के मुताबिक, प्रॉडक्शन लिंक्ड स्कीम घरेलू बिक्री और निर्यात दोनों के लिए मिल सकती है और इसको सितंबर अंत तक अंतिम रूप दिया जा सकता है।

देश में बिकने वाली हर सौ में से सिर्फ एक गाड़ी इलेक्ट्रिक होती है। टाटा मोटर्स अभी देश की सबसे बड़ी इलेक्ट्रिक कार कंपनी है। M&M के अलावा टूव्हीलर कंपनी TVS मोटर और हीरो मोटोकॉर्प अपनी EV योजना पर काम कर रही हैं।

मारुति सुजुकी का ईवी बनाने का इरादा फिलहाल नहीं

मारुति सुजुकी का EV बनाने का इरादा फिलहाल नहीं है। पिछले महीने ही उसके चेयरमैन आर सी भार्गव ने कहा था कि अभी देश में ज्यादा इलेक्ट्रिक कारें नहीं बिक रही हैं और ये फिलहाल ग्राहकों के लिए किफायती भी नहीं हैं।

लगभग दो लाख करोड़ रुपए की PLI स्कीम का हिस्सा है:- यह ग्लोबल मैन्युफैक्चरिंग कंपनियों को भारत बुलाने के लिए बनाई गई लगभग दो लाख करोड़ रुपए की प्रॉडक्शन लिंक्ड इंसेंटिव स्कीम का हिस्सा है। सरकार इस योजना के तहत ऑटो, ऑटो पार्ट्स सहित 10 सेक्टरों की मैन्युफैक्चरिंग कंपनियों को पांच साल तक इंसेंटिव देकर घरेलू बाजार में उत्पादन और निर्यात को बढ़ावा देना चाहती है।

महंगाई से थोड़ी राहत

इस महीने आज दूसरी बार कम हुए पेट्रोल-डीजल के दाम

शहर	पेट्रोल (रुपए/लीटर)	डीजल (रुपए/लीटर)
श्रीगंगानगर	113.07	102.31
अनूपपुर	112.45	100.04
परभणी	109.83	97.20
भोपाल	109.63	97.43
जयपुर	108.13	97.76
मुंबई	107.26	96.19
दिल्ली	101.19	88.62

दिल्ली में पेट्रोल 101.34 और डीजल 88.77 रुपए लीटर बिक रहा

आईटीडीसी इंडिया ई-प्रेस/ आईटीडीसी न्यूज नई दिल्ली

तेल कंपनियों ने आज पेट्रोल-डीजल के दामों में कटौती की है। आज दिल्ली में पेट्रोल-डीजल 15-15 पैसे सस्ते हुए हैं। इस कटौती के बाद दिल्ली में पेट्रोल 101.19 और डीजल 88.62 रुपए लीटर बिक रहा है। इस महीने आज दूसरी बार पेट्रोल-डीजल के दाम कम हुए हैं। इससे पहले 1 सितंबर को पेट्रोल और डीजल दोनों के दामों में 15-15 पैसे प्रति लीटर की कमी की गई थी। देश के 20 राज्यों में पेट्रोल 100 रुपए प्रति लीटर पर पहुंच गया है। मध्य प्रदेश, आंध्र प्रदेश, बिहार, महाराष्ट्र, कर्नाटक, मणिपुर, तेलंगाना, पंजाब, सिक्किम, उड़ीसा, केरल, दिल्ली, तमिलनाडु और राजस्थान के सभी जिलों में पेट्रोल 100 रुपए प्रति लीटर के ऊपर है। वहीं जम्मू-कश्मीर, पश्चिम बंगाल, उत्तर प्रदेश, त्रिपुरा, नागालैंड और छत्तीसगढ़ में भी कई जगहों पर पेट्रोल 100 रुपए लीटर के पार है। वहीं डीजल की बात करें तो उड़ीसा, मध्य प्रदेश और राजस्थान में कई जगहों पर ये अभी भी 100 रुपए प्रति लीटर के ऊपर है। ऑयल मार्केटिंग कंपनियां कीमतों की समीक्षा के बाद रोजाना पेट्रोल और डीजल के रेट तय करती हैं। इंडियन ऑयल, भारत पेट्रोलियम और हिंदुस्तान पेट्रोलियम सुबह 6 बजे पेट्रोल और डीजल की दरों में बदलाव करती हैं।

सितंबर में सस्ती मिलेंगी कार

मारुति की एस-प्रेसो पर 25 हजार तो ऑल्टो पर 20 हजार रुपए का डिस्काउंट ऑफर

आईटीडीसी इंडिया ई-प्रेस/ आईटीडीसी न्यूज नई दिल्ली

सितंबर 2021 में फेस्टिवल सीजन शुरु होते ही देश में कार बनाने वाली कंपनियों ने अपनी गाड़ियों पर डिस्काउंट देना शुरू कर दिया है। मारुति सुजुकी ने अपनी कारों पर आकर्षक डील का ऐलान किया है। कंपनी एरिना रेंज की कारों पर मैक्सिमम 25 हजार रुपए तक का डिस्काउंट दे रही है। इस खबर में हम मारुति के एरिना लाइन-अप पर सितंबर 2021 में उपलब्ध सभी ऑफर्स के बारे में बता रहे हैं।

हैचबैक के सभी वैरिएंट पर 15,000 का एक्सचेंज बोनस:- ऑल्टो के पेट्रोल,ष्ट वैरिएंट पर 20,000 रुपए तो नॉन,ष्ट वैरिएंट पर 15,000 रुपए का डिस्काउंट ऑफर मिल रहा है। हालांकि ऑल्टो के ष्टह्वत्न वर्जन पर किसी तरह का कैश डिस्काउंट नहीं है। छोटी हैचबैक के सभी वैरिएंट पर 15,000 का एक्सचेंज बोनस और कॉर्पोरेट डिस्काउंट 3,000 रुपए का मिल रहा है।

S-प्रेसो पर 25,000 रुपए का कैश डिस्काउंट:- स-प्रेसो के पेट्रोल वर्जन पर 25,000 रुपए का कैश डिस्काउंट मिलेगा, जबकि ष्टह्वत्न वर्जन पर किसी भी तरह का कैश डिस्काउंट नहीं है। अगर ?सिलेरियो की बात करें तो इसमें भी कोई कैश डिस्काउंट नहीं है। स-प्रेसो और सिलेरियो दोनों पर 15,000 रुपए का एक्सचेंज बोनस है और 3000 रुपए का कॉर्पोरेट डिस्काउंट मिल रहा है। मारुति वैगनआर के पेट्रोल वर्जन पर 10,000 रुपए का कैश डिस्काउंट जबकि ष्टह्वत्न वर्जन पर कोई कैश डिस्काउंट नहीं है। स्विफ्ट और डिजायर दोनों पर 10,000 रुपए का कैश डिस्काउंट मिलेगा।

शेयर बाजार 58 हजार के पार तीव्र करेक्शन की आशंका

आईटीडीसी इंडिया ई-प्रेस/ आईटीडीसी न्यूज नई दिल्ली

चौतरफा लिवाली के बल पर नित नए रिकॉर्ड बना रहे शेयर बाजार में तीव्र करेक्शन का अनुमान जताया जा रहा है। इसके मद्देनजर छोटे निवेशकों विशेषकर खुदरा निवेशकों को निवेश में सावधानी बरतने की सलाह दी गई है। बीते सप्ताह बीएसई का 30 शेयरों वाला संवेदी सूचकांक सेंसेक्स 2005.23 अंकों की जबदरस्त उछाल के साथ अब तक के सार्वकालिक रिकॉर्ड उच्चतम स्तर 58129.95 अंक के स्तर पर पहुंच गया। इस दौरान नेशनल स्टॉक एक्सचेंज (एनएसई) का सूचकांक निफ्टी भी 631.35 अंकों की उछाल के साथ अब तक उच्चतम स्तर 173336.55 अंक पर पहुंच गया। दिग्गज कंपनियों की तरह की छोटी और मझौली कंपनियों में भी जबरदस्त लिवाली देखी गई है। बीएसई का मिडकैप 1126.80 अंकों की तेजी लेकर 24382.19 अंक पर और स्मॉलकैप 1021.16 अंक की बढ़त के साथ 27305.31 अंक पर पहुंच गया।

विश्लेषकों का कहना है कि जिस तरह से शेयर बाजार में पिछले दो सप्ताह से तेजी देखी जा रही है उससे शेयर बाजार में तीव्र करेक्शन की आशंका प्रबल हो रही है क्योंकि विदेशी संस्थागत निवेशक किसी भी समय मुनाफा काट कर निकल सकते हैं। विदेशी निवेशकों के बल पर ही शेयर बाजार नित नए रिकॉर्ड बना रहा है।

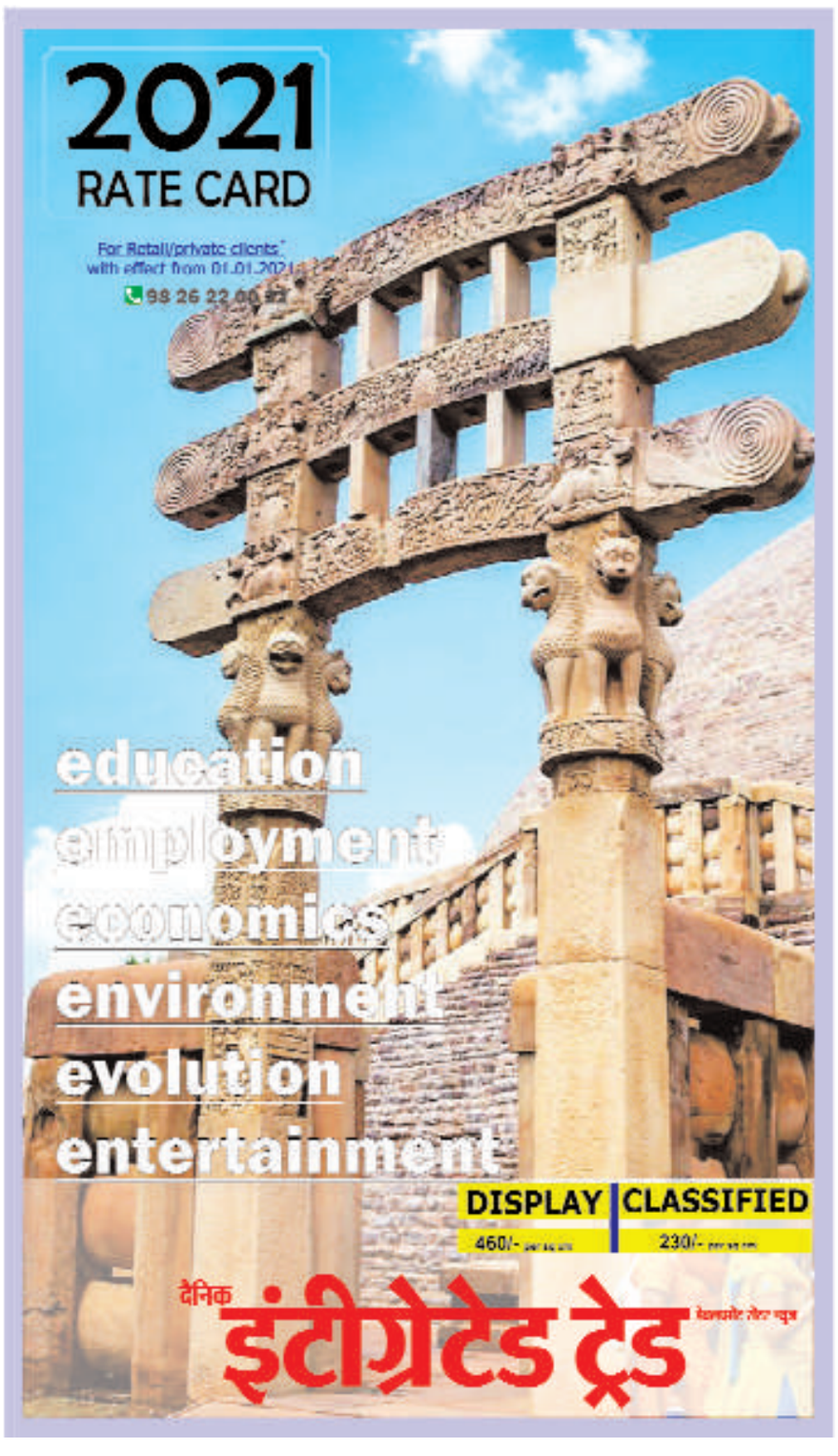

आवश्यक दवाइयों के रेट्स में होगा बदलाव

आईटीडीसी इंडिया ई-प्रेस/ आईटीडीसी न्यूज नई दिल्ली

कोरोना काल में केंद्र सरकार ने आम आदमी को राहत दी है। सरकार के इस फैसले के बाद अलग-अलग बीमारियों के इलाज में इस्तेमाल होने वाली 39 तरह की दवाओं की कीमत अब कम हो जाएगी। दरअसल, केंद्र सरकार ने इन्हें आवश्यक दवाओं की राष्ट्रीय सूची (एन.एल.ई.एम.) में शामिल कर लिया है। इनमें कोरोना से लेकर कैंसर, डायबिटीज और टीबी जैसी बीमारियों के इलाज में काम आने वाली दवाइयां शामिल हैं। केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री मनसुख मंडाविया ने गुरुवार को इंडियन काउंसिल ऑफ मेडिकल रिसर्च (आई.सी.एम.आर) में एक कार्यक्रम में कहा कि उन्होंने एन.एल.ई.एम. की संशोधित सूची जारी की है। आई.सी.एम.आर दवाओं पर मूल्य नियंत्रण बढ़ाने पर काम कर रहा है। एन.एल.ई.एम. के तहत सूचीबद्ध दवाएं और उपकरण राष्ट्रीय औषधि मूल्य निर्धारण प्राधिकरण (एन.पी.पी.ए.) द्वारा निर्धारित कीमतों पर बेचे जाने चाहिए। हालांकि, सामान्य तंत्र से हटकर प्रस्तावित सूची को एन.पी.पी.ए. को भेजे जाने से पहले दूसरी समिति द्वारा जांच की जाएगी। यही नहीं, पहले से शामिल 16 दवाओं को इस लिस्ट से बाहर कर दिया गया है। इससे उनकी कीमतों में इजाफा हो सकता है। बता दें कि दवाओं के उपयोग में आए बदलाव को देखकर भी उन्हें लिस्ट से हटाया जाता है। साथ ही यह भी तय करना होता है कि यह सूची बहुत लंबी नहीं हो। एन.एल.ई.एम. 2021 में अब 399 आवश्यक दवाओं के नाम मौजूद हैं। यह वर्तमान में प्रत्यक्ष मूल्य नियंत्रण में हैं। इसका मतलब इस लिस्ट में आने वाली सभी दवाइयों पर सरकार की ओर से प्राइस कैप है जिससे कि कम कीमत पर इन दवाओं को मरीजों को उपलब्ध कराया जा सके।

वह जाति भेद मिटने का सपना

भारतीय जनतंत्र एवं जाति के संबंध लगातार बदलते रहे हैं, किंतु इन बदलावों को समग्रता में समझने में हम कई बार सफल होते हैं, तो कई बार असफल भी हो जाते हैं। जब भारतीय संविधान के माध्यम से भारतीय जनतंत्र का नक्शा गढ़ा गया था, तब यह परिकल्पना की गई थी कि जातिगत असमानता से जूझ रहे समाज की असमानता जनतांत्रिक अवसरों व लाभों के बंटवारे से कम होगी और धीरे-धीरे भारतीय समाज जाति मुक्त समरस समाज में बदल जाएगा। शायद इसीलिए भारत में जाति व्यवस्था की आलोचना के एक महत्वपूर्ण सिद्धांतकार बाबा साहेब आंबेडकर ने 'जाति के निर्मूलन' का सिद्धांत व आकांक्षा विकसित की थी। हालांकि, भारतीय जनतंत्र के विकास के कुछ दिनों बाद ही यह लगने लगा था कि इसकी चुनावी व्यवस्था के अंतर्निहित अंतर्विरोधों के कारण 'पारंपरिक जातिबोध' नए-नए ढंग से अविष्कृत एवं अवतरित हो समाज में नए-नए रूपों में व नए-नए अवसरों पर प्रकट होने लगा है। भारतीय समाज में जनतंत्र और विकास के बढ़ते अवसरों के कारण 'गतिशीलता' की जो प्रक्रिया 'संस्कृतिकरण' के रूप में देखी गई थी, वह 'विसंस्कृतिकरण' के रूप में आने लगी। भारतीय जनतंत्र में जातियां मुखरित ही नहीं हुईं, बल्कि वे सरकारी खाद-पानी पा पलने-बढ़ने लगीं। भारतीय जन में एक ऐसा सत्ता प्रेरित आत्मबोध पैदा हुआ, जिसमें नागरिक बोध व जाति बोध साथ-साथ विकसित होने लगे।

ऐसे में, भारतीय जनतंत्र एवं जाति के संबंधों में एक नया मोड़ आया, जहां जनतांत्रिक लाभों में हिस्सेदारी संख्या बल के आधार पर मांगी जाने लगी। राममनोहर लोहिया और कांशीराम इस विचार के प्रखर सिद्धांतकार बन कर उभरे। पिछड़ा मांगे सौ में साठ का जो दर्शन राम मनोहर लोहिया ने प्रस्तुत किया, कांशीराम ने उसे जिसकी जितनी संख्या भारी, उसकी उतनी हिस्सेदारी के नारे से आगे बढ़ाया। ये प्रयोग सन 1960 के आस-पास शुरू हुए और लगभग अभी तक चल रहे हैं। इन प्रयोगों ने यह दिखाया कि जाति भाव एक तरफ सीमांत के समूहों के लिए क्षणिक मुक्तिदायी तो प्रतीत होता है, किंतु अपने दीर्घकालीन प्रभाव में जातिभाव आधारित सशक्तीकरण अपने भीतर एक 'नव-आधिपत्य' का सृजन भी करता है। समानता की चाह एवं नव-आधिपत्य के कारण सतत उत्पादित हो रही असमानता एक-दूसरे के साथ अंतर्विरोधी संबंध रचते हुए भारतीय जनतंत्र में एक बड़ा विरोधाभास पैदा कर रहे हैं।

पिछड़े एवं बहुजन आंदोलन से जो जनतांत्रिक राजसत्ता उभरी, उसमें भी हम सबने महसूस किया कि इन सामाजिक समूहों के कुछ खास वर्ग जो संख्या में बड़े थे, जिनके पास आकांक्षा की चाह उन्हीं समूहों की अन्य जातियों से पहले आ गई थी, उन्हीं को जनतांत्रिक अवसरों का ज्यादा लाभ मिल पाया। इन्हीं सामाजिक समूहों की ज्यादातर जातियां जिनका संख्या बल कम है, अपने ही समूह की कुछ प्रभावी जातियों से आकांक्षा और प्रतिनिधित्व की चाह को मुखरित करने में पीछे रह गईं, उन तक सामाजिक न्याय की परियोजना पहुंच ही नहीं पा रही है। फलतः सामाजिक न्याय के अवसरों के भी समान बंटवारा का प्रश्न उठने लगा।

बाबा साहेब आंबेडकर ने जिस जाति मुक्त समाज की कल्पना की थी, उत्तर भारत में दलित मुक्ति के सबसे बड़े प्रयोक्ता कांशीराम ने उससे हटकर 'जाति से जाति को काटो' के सिद्धांत पर काम करना शुरू किया। उनका मानना था कि अनुसूचित समूहों में जाति भाव जगाकर उनकी राजनीतिक गोलबंदी कर पारंपरिक आधिपत्य को चुनौती दी जा सकती है। उन्होंने इस प्रयोग को उत्तर भारत, विशेषकर उत्तर प्रदेश में बहुत सफलता से लागू किया। किंतु इस क्रम में उन्होंने देखा कि इसी प्रक्रिया में आधिपत्य के नए रूप उभर गए हैं, जिनसे उनकी टकराहट बढ़ती जा रही है। इन जनतांत्रिक टकराहटों को वे किसी निष्कर्ष पर पहुंचा पाते, तब तक उनका देहावसान हो गया।

कांशीराम बहुजन आंदोलन के सामने एक बड़ा नैतिक प्रश्न छोड़ गए कि भारतीय जनतंत्र एवं इन सभी मुक्तिकारी आंदोलनों में जिनकी संख्या भारी है, उन्हें तो मौका मिल रहा है, किंतु उनका क्या होगा, जिनकी संख्या छोटी है? हम सब यह जानते हैं कि पिछड़े एवं अनुसूचित समूहों में मुश्किल से 10 के आस-पास ही ऐसे जाति-समूह हैं, जिन्हें अब तक भारतीय जनतंत्र व जनतांत्रिक राजनीति में हिस्सेदारी मिलती दिख रही है। शेष दोनों ही संवर्गों में लगभग 40 से ज्यादा जाति समूह आज भी भारतीय जनतंत्र में अदृश्य जनसंख्या की तरह वास कर रहा है। ऐसे में, 'जाति से जाति को काटो' प्रयोग की असफलता हम साफ देख रहे हैं। जाति आधारित जनगणना की मांग करने वाले कुछ राजनेताओं, पत्रकारों और बौद्धिकों का तर्क है कि इससे राज्य संचालित परियोजनाओं के वितरण में संख्या बल के आधार पर बराबर की हिस्सेदारी देने में मदद मिलेगी, दूसरा, जाति आधारित जनगणना से अगर भारतीय समाज में जाति भाव प्रखर होता है, उथल-पुथल मचता है, तब भी अंततः सामाजिक समरसता ही विकसित होगी। वैसे ये दोनों मकसद समाजवादी आंदोलन और बहुजन आंदोलनों में भी पूरे नहीं हुए हैं और हमारे जनतंत्र के समक्ष बड़े नैतिक प्रश्न खड़े हो गए हैं।

संपादकीय

गणना से नफा हो, नुकसान नहीं

मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के नेतृत्व में बिहार के एक सर्वदलीय प्रतिनिधिमंडल ने देश में जातिगत जनगणना की मांग को लेकर सोमवार को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से मुलाकात की। बैठक के बाद मीडिया से बात करते हुए बिहार विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष तेजस्वी यादव (राजद) ने सुझाव दिया कि सामान्य दशकीय जनगणना में जातिगत जनगणना भी की जा सकती है, आखिर यह धार्मिक समूहों और अनुसूचित जातियों (एससी) एवं जनजातियों (एसटी) की अलग से गणना करती ही है। इस तरह के सुझाव निस्संदेह तार्किक जान पड़ते हैं, लेकिन इससे जातिगत जनगणना का मकसद पूरा नहीं हो सकता। आखिर क्यों? इसकी चार वजहें हैं। पहली, तर्क यह दिया जा रहा है कि भारत ने 1931 के बाद से जातीय जनगणना नहीं की है। मगर हमें इनकी कमोबेश संख्या तो पता है। अंग्रेज हुकूमत 1881 से लेकर 1931 तक दशकीय जनगणना में जाति की गणना किया करती थी। मगर इसके बाद यह प्रथा बंद कर दी गई और आजाद भारत ने भी इसे फिर से शुरू नहीं किया। हालांकि, जनगणना में एससी-एसटी की आबादी की गिनती होती रही है। जनगणना में सिर्फ एससी-एसटी की गणना करने का मतलब यह नहीं है कि भारत की आबादी में मौजूद सामाजिक विभाजन से हम अनजान हैं। विभिन्न सरकारी सर्वेक्षणों में, जैसे राष्ट्रीय सैंपल सर्वे ऑफिस (एनएसएसओ) और राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण (एनएफएचएस) में एससी-एसटी और अन्य पिछड़े वर्गों (ओबीसी) की व्यापक हिस्सेदारी दर्ज की ही जाती है। चूंकि जनगणना के विपरीत जातिगत हिस्सेदारी का पता सर्वे आधारित अनुमान से होता है, इसलिए इस पर राजनीतिक बहस होती है। इस बहस में अक्सर यह बात भुला दी जाती है कि एनएफएचएस-एनएसएसओ के ताजा अनुमान मंडल आयोग की रिपोर्ट के अनुमान से बहुत अलग नहीं हैं। दूसरी वजह, जातीय जनगणना की मांग सरकारी नौकरियों और शैक्षणिक संस्थानों में आरक्षण नीति से गहरे रूप में नत्थी है। यह एक अनुकूल सांख्यिकीय गणना नहीं है। ऐसे दो कारक हैं, जो मायने रखते हैं- आरक्षण के लिए पात्र लोगों की सूची में अधिक से अधिक सामाजिक समूहों को शामिल करने की अनवरत इच्छा और दूसरा, देश में आरक्षण की सीमा 50 फीसदी तय करने संबंधी सर्वोच्च न्यायालय के फैसले पर विचार करने की मांग। मगर आरक्षित श्रेणी में अधिक समुदायों को शामिल करने से उन समूहों की संभावनाएं कम हो जाएंगी, जो पहले से आरक्षण व्यवस्था का लाभ उठा रहे हैं। ओबीसी के लिए 27 फीसदी आरक्षण देने की मंडल आयोग की सिफारिश 50 फीसदी आरक्षण की सीमा का प्रत्यक्ष परिणाम ही थी। रिपोर्ट स्पष्ट कहती है कि ओबीसी की आबादी (हिंदू और गैर-हिंदू, दोनों) भारत की कुल जनसंख्या की लगभग 52 फीसदी है। लिहाजा, केंद्र सरकार के अधीन सभी पदों में उसे 52 प्रतिशत आरक्षण मिलना चाहिए। लेकिन यह सुप्रीम कोर्ट द्वारा तय सीमा से खिलाफ जा सकता है। चूंकि ओबीसी के लिए प्रस्तावित आरक्षण इतना होना चाहिए, जो एससी और एसटी के लिए 22.5 प्रतिशत के साथ जोड़ने पर भी 50 फीसदी के नीचे रहे, इसलिए मंडल आयोग केवल 27 फीसदी आरक्षण की सिफारिश करने को बाध्य है, भले ही ओबीसी की आबादी आरक्षण से करीब दोगुनी हो। हालांकि, सांविधानिक रूप से कहें, तो ओबीसी आरक्षण एससी-एसटी आरक्षण के समान नहीं है। इसका सबसे बड़ा प्रमाण तो यही है कि एससी-एसटी आरक्षण के विपरीत, ओबीसी क्रीमी लेयर में आते हैं और एक सीमा के बाद वे आरक्षण का लाभ नहीं उठा सकते। तीसरी वजह, ओबीसी को आरक्षण का पूरा फायदा नहीं मिला है, हां, इससे उसे मदद जरूर मिली है। 17 जुलाई, 2019 को केंद्रीय राज्य मंत्री जितेंद्र सिंह ने लोकसभा में एक लिखित उत्तर में बताया था कि एससी और एसटी का प्रतिनिधित्व आरक्षण के निर्धारित प्रतिशत (क्रमशः 15 और 7.5 फीसदी) से अधिक है। केंद्र सरकार की सेवाओं में ओबीसी की हिस्सेदारी 21.57 प्रतिशत है, जो उनके लिए आरक्षित सीमा से कम है। हालांकि, सितंबर, 1993 में शुरू होने के बाद से इसमें सिलसिलेवार वृद्धि ही हुई है। मौजूदा जानकारी के मुताबिक, 1 जनवरी, 2012 को ओबीसी की हिस्सेदारी 16.55 प्रतिशत थी, जो बढ़कर 1 जनवरी, 2016 को 21.57 फीसदी हो गई है।

फर्जी खबरों पर कसे शिकंजा

रही बात भारत की, तो फर्जी खबरों को रोकने के लिए किसी 'डेडिकेटेड' यानी खास कानून का यहां भी अभाव है। इस मसले पर सूचना प्रौद्योगिकी कानून (आईटी ऐक्ट) भी मौन है। हालांकि, 2008 में जब आईटी ऐक्ट में संशोधन किए गए थे, तब उसमें धारा 66-ए जोड़ी गई थी। इसमें कुछ हद तक फर्जी खबरों से निपटने की व्यवस्था थी। इसमें कहा गया था कि यदि कोई अपने कंप्यूटर अथवा मोबाइल से आपत्तिजनक सामग्री प्रकाशित-प्रसारित करता है, तो उसे तीन साल तक की सजा या पांच लाख तक जुर्माना या फिर दोनों, भुगतना पड़ सकता है।

यू-ट्यूब, वेबसाइट समेत सोशल मीडिया पर प्रकाशित-प्रसारित होने वाली फर्जी खबरों और रिपोर्ट को लेकर सुप्रीम कोर्ट की चिंता बेजा नहीं है। वाकई, ऑनलाइन माध्यमों से अब सत्य से अधिक असत्य सूचनाएं प्रसारित की जाती हैं। इसका एक बड़ा कारण यह है कि तमाम डिजिटल मंच समझ चुके हैं कि सच की तुलना में वे फर्जी खबरों के प्रकाशन-प्रसारण से अधिक पैसा कमा सकते हैं। इसीलिए, वे अपने हितों को साधने का प्रयास करते हैं और ऊल-जुलूल खबरों को सच का चोला पहनाकर परोसने की कोशिश में लगे रहते हैं। शीर्ष अदालत का यह कहना वाजिब है कि फेक न्यूज के माध्यम से सोशल मीडिया पर 'नैरेटिव' गढ़ी जाती है। देखा जाए, तो यह एक वैश्विक चुनौती है। इंटरनेट ने भूगोल को इतिहास बना दिया है और तमाम उपभोगकर्ताओं को छद्म वेश में अपनी गतिविधियां करने की छूट दे दी है। चूंकि लोगों को लगता है कि उनकी पहचान इंटरनेट पर जाहिर नहीं हो सकती, इसलिए वे आभासी दुनिया में ऐसी तमाम हरकतें करते रहते हैं, जो असल जीवन में कतई नहीं कर सकते।

फेक न्यूज आज इसलिए भी चलन में हैं, क्योंकि किसी राष्ट्र के कानून उसकी भौगोलिक सीमाओं तक ही लागू होते हैं। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर न कोई मापदंड है, और न कोई नीति। ऐसा कोई समझौता भी नहीं हो सका है, जिसमें तमाम देश अपने-अपने यहां फर्जी खबरों का प्रकाशन-प्रसारण रोकने का सामूहिक प्रयास कर सकें। लिहाजा, स्थानीय स्तर पर इन पर लगाम लगाने की कोशिश की जाती है। मलयेशिया, सिंगापुर, फ्रांस जैसे देशों ने तो अपने-अपने यहां फर्जी खबरों से निपटने के लिए खास कानून बनाए भी हैं। मगर अंतरराष्ट्रीय कानून के न होने से स्थिति संभल नहीं रही। अगर अब भी ठोस प्रयास नहीं किए गए, तो कुछ समय के बाद इंटरनेट पर यह तय करना बहुत मुश्किल हो जाएगा कि कौन-सी खबर सच्ची है और कौन-सी फर्जी।

रही बात भारत की, तो फर्जी खबरों को रोकने के लिए किसी 'डेडिकेटेड' यानी खास कानून का यहां भी अभाव है। इस मसले पर सूचना प्रौद्योगिकी कानून (आईटी ऐक्ट) भी मौन है। हालांकि, 2008 में जब आईटी ऐक्ट में संशोधन किए गए थे, तब उसमें धारा 66-ए जोड़ी गई थी। इसमें कुछ हद तक फर्जी खबरों से निपटने की व्यवस्था थी। इसमें कहा गया था कि यदि कोई अपने कंप्यूटर अथवा मोबाइल से आपत्तिजनक सामग्री प्रकाशित-प्रसारित करता है, तो उसे तीन साल तक की सजा या पांच लाख तक जुर्माना या फिर दोनों, भुगतना पड़ सकता है। मगर इस प्रावधान की वैधता को शीर्ष अदालत में चुनौती दी गई और मार्च, 2015 में अदालत ने इसे रद्द कर दिया। जब से धारा 66-ए असांविधानिक घोषित की गई है, फर्जी खबरें परोसने वालों की पौ बारह है। राजनेता, राजनीतिक दल, धार्मिक संस्था, बिजनेस समुदाय, कॉरपोरेट आदि सभी इसमें जुटे हैं।

हालांकि, केंद्र सरकार ने इसे रोकने के कुछ प्रयास किए हैं। 25 फरवरी, 2021 को आईटी रूल्स 2021 प्रकाशित किए गए और उनको अमल में भी लाया गया। इसका एक प्रावधान कहता है कि सर्विस प्रोवाइडर (सेवा देने वाला) की यह जिम्मेदारी है कि वह अपने मंच पर बेबुनियाद या झूठी सामग्रियों के प्रकाशन-प्रसारण पर रोक लगाए। सर्विस प्रोवाइडर के शिकायत प्रकोष्ठ को इस बाबत लिखित शिकायत की जा सकती है, जिस पर 15 दिनों में कार्रवाई करने की अनिवार्यता है। मगर मुश्किल यह है कि ऐसे प्रावधान आम लोगों की जानकारी में नहीं हैं। लोग भी इतने जागरूक नहीं हैं कि वे यह समझ सकें, फर्जी खबर किस तरह उनकी सोच बदल सकती है। यहां यह जानना भी जरूरी है कि बिना सत्यता जांचे यदि कोई व्यक्ति किसी खबर को (जो झूठी खबर हो) प्रकाशित-प्रसारित करता है, तो उस पर भी कानूनी कार्रवाई हो सकती है। आईटी ऐक्ट की धारा 67 के तहत यह एक दंडनीय अपराध है और आरोप साबित होने पर तीन साल तक की सजा या पांच लाख रुपये तक का जुर्माना, अथवा दोनों सुनाई जा सकती है।

जाहिर है, हमें लोगों को जागरूक करना होगा और यह बताना होगा कि फर्जी खबरें उनकी जड़ों को खोखला कर रही हैं। वेबसाइट्स, सोशल मीडिया और यू-ट्यूब भी इससे संभल सकेंगे। एक अन्य उपाय, इनके खिलाफ कानूनी प्रावधान की व्यवस्था करना भी है। जीवन जीने के अधिकार, यानी अनुच्छेद 21 के तहत यह किया जा सकता है। यह इसलिए भी जरूरी है, क्योंकि यदि ऐसा नहीं हुआ, तो सीमा-पार बैठे भारत-विरोधी तत्व फर्जी व झूठी खबरों के प्रकाशन-प्रसारण से हमारी प्रभुता, सुरक्षा और अखंडता को चोट पहुंचा सकते हैं। हालांकि, एक विरोधाभास भी है। दरअसल, कोई राजनीतिक दल इस दिशा में आगे नहीं बढ़ना चाहता, क्योंकि उनके आईटी सेल भी ऐसे ही कामों में शामिल रहते हैं।

बहरहाल, फर्जी खबरों की तरह सनीसनीखेज शीर्षकों से प्रकाशित-प्रसारित खबरें भी हमारा खूब नुकसान करती हैं। इस तरह की खबरों में शीर्षक गलत व झूठे होते हैं या फिर उनका मूल खबरों से कोई वास्ता नहीं होता। ऐसे मामलों में, भारतीय दंड संहिता की धारा 468 के तहत उस सोशल मीडिया मंच के खिलाफ मुकदमा दर्ज कराया जा सकता है। कानून की नजर में यह एक तरह की इलेक्ट्रॉनिक धोखाधड़ी है, जिसमें कैद और जुर्माने, दोनों का प्रावधान है। मगर अधिकांश लोग ऐसे प्रावधानों से वाकिफ नहीं हैं, इसलिए अगर कुछ ठोस कार्रवाई हो और वह आम लोगों की निगाहों में आए, तब कोई बात बने। इससे फर्जी व झूठी खबरों को परोसने वाली संस्थाओं को भी कड़ा संदेश मिलेगा। इसका यह भी मतलब है कि भारतीय दंड संहिता और आईटी ऐक्ट के प्रावधानों की मदद से स्थिति थोड़ी सुधारी जा सकती है, लेकिन फर्जी खबरों को रोकने के लिए समर्पित और खास कानून न होने की वजह से आमतौर पर अदालत में दोष साबित करना काफी चुनौतीपूर्ण हो जाता है।

'ये धुआं-सा कहां से उठता है'

दिल्ली के प्रसिद्ध कवि मीर ने एक बार पूछा था, देख तो दिल कि जां से उठता है, ये धुआं-सा कहां से उठता है। गजल का यह मतला कोई ढाई-सौ साल पुराना है। दिल्ली में हम आज भी कुछ ऐसे ही सवाल पूछ रहे हैं, चाहे मीर का अंदाज-ए-बयां न भी हो। एक नया आकलन बताता है कि दिल्ली की जहरीली हवा में सांस लेने वालों की उम्र उम्मीद से करीब दस साल कम रह जाती है। उत्तर भारत के लिए यह आंकड़ा साढ़े-आठ साल है। उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखंड वाले अपनी अपेक्षित आयु से सात-आठ साल पहले ही वायु प्रदूषण की बलि चढ़ जाते हैं। इस तरह के तथ्य ढाई दशक से लगातार सामने आ रहे हैं। किंतु सेहत को नुकसान भी बढ़ रहा है और जान को जोखिम भी। झोली भर-भरकर ओलंपिक पदक बटोरने की आकांक्षा करने वाली दिल्ली के हर तीसरे बच्चे का फेफड़ा इस समय कमजोर पाया जा रहा है। वायु प्रदूषण की हमारी समझ जितनी गहरी होती जा रही है, इससे निपटने का हमारा बूता उतना ही घटता दिख रहा है।

कभी-कभी साहित्य में ऐसी बात सहज ही दिख जाती है, जिसे समझाना विज्ञान के लिए कठिन होता है। उत्तर भारत के पुराने किस्से-कहानियों में गांवों पर खड़े हुए धुएं का वर्णन मिलता है। उस समय न तो कोयला जलाने वाले कारखाने थे, न ही डीजल-पेट्रोल की गाड़ियां ही। वह धुआं घरों में जलते चूल्हों का था। रसोई गैस का चलन आने के बाद लकड़ी और कंडे का इस्तेमाल कम हुआ है, किंतु दुनिया भर के सबसे प्रदूषित शहरों की सबसे बड़ी संख्या उत्तर भारत में ही है। ऐसा नहीं है कि बाकी भारत में धुआं उगलने वाले उद्योग या ट्रैफिक नहीं है, किंतु उत्तर भारत के मैदानी इलाकों का भूगोल बाकी देश से अलग है। इसे ध्यान में रखें, तो वायु प्रदूषण की मार समझ में आती ही है, गंगा-यमुना जैसी नदियों के प्रदूषण के कारण भी साफ होते हैं। हम जिस भूखंड पर रहते हैं, वह लाखों साल पहले एशिया से टकराया था। हिमालय इसी टक्कर से पैदा हुआ,

इसी से हमारा उत्तरी भूभाग एशिया के नीचे दब रहा है, जबकि तिब्बत समुद्र से साढ़े-तीन किलोमीटर ऊपर पहुंच गया है। इस निचले इलाके के उत्तर में हिमालय है, दक्षिण में छोटानागपुर और मालवा के पठार भी हैं और विंध्याचल पर्वत माला भी।

यह खाई हमें दिखती नहीं है। इसे हिमालय से आने वाली प्रचंड नदियों ने उसकी मिट्टी से, उसके गाद से भर दिया है। तभी पंजाब से बंगाल तक ऐसा सपाट मैदानी इलाका है, जो पानी ही बना सकता है। इस निचले इलाके के उत्तर-दक्षिण, दोनों तरफ पर्वत शृंखलाएं हैं। इसके पश्चिम की ओर थार का मरुस्थल है, जहां से रेत के कण उड़ के आते हैं। यानी यह एक भीमकाय घाटी है। यमुनोत्री और गंगोत्री से निकलने वाली धाराएं बंगाल जाकर समुद्र से मिलती हैं। इनके करीब से ही उभरने वाली सतलुज जैसी नदियां सिंधु में मिलकर अरब सागर में विसर्जित होती हैं।

पंजाब से बंगाल तक के इस निचले इलाके में बाकी देश की तुलना में हवा कम चलती है। हिमालय के ऊंचे शिखरों से निकली बर्फीली हवाओं से इस इलाके के वायुमंडल के ऊपरी हिस्से पर एक ठंडी चादर जैसी बिछी रहती है। यानी यहां का धुआं उतनी आसानी से उठकर छितराता नहीं है, जितना दक्षिणी या पश्चिमी भारत में होता है। यानी दिल्ली, आगरा, कानपुर, इलाहाबाद, वाराणसी और पटना जैसे नगर ऐसे क्षेत्र में बसे हैं, जिसकी हवा किसी 'प्रेशर कुकर' की तरह बंद है।

इस पूरे क्षेत्र में धुआं पैदा करने वाले सभी उद्यमों की सीमा तय होनी चाहिए, लेकिन यह काम बहुत कठिन है। हमारी लगभग आधी आबादी इस इलाके में बसती है। इसका कारण भी भूगोल में मिलता है। कृषि पैदावार नदियों के किनारे अधिक होती है। हिमालय की मिट्टी उर्वर है। नदी किनारे कई और सुविधाएं मिलती हैं। सड़क और रेल के विस्तार से पहले यातायात का बड़ा साधन नदियां ही थीं। आधुनिक विज्ञान मनुष्य की उत्पत्ति नदियों के किनारे नहीं मानता है, पर सभ्यताएं तो नदी किनारे ही पनपी हैं। बड़े राज्य नदियों के किनारों से ही खड़े हुए हैं, साम्राज्य भी। इससे समझा जा सकता है कि गंगा इतनी प्रदूषित क्यों है, यह भी कि उसे साफ करना इतना कठिन क्यों है, जबकि इसके लिए कार्यक्रम 1986 से चल रहे हैं। उत्तर में हिमालय और दक्षिण में विंध्य पर्वत का पानी भी गंगा में आकर मिलता है। इतने बड़े इलाके का मैला पानी ही नहीं, सभी जहरीले पदार्थ इस्तेमाल होने के बाद गंगा में पहुंचते हैं। हम जो दवाएं खाते हैं, उनका ज्यादातर हिस्सा हमारे मल-मूत्र से निकल जाता है। यह दूसरी नदियों से होता हुआ गंगा में पहुंचता है। जब करोड़ों लोगों का अपशिष्ट नदियों में मिले, तब कोई अचरज नहीं कि गंगा के इलाके में कैंसर रोग अत्यधिक है।

हमारी राजनीति का भूगोल से कोई लेना-देना नहीं है। हम धर्म या जाति या क्षेत्र के आधार पर अपना-पराया तय करते हैं। किसी पहचान को रूढ़ मानकर अपने को दूसरों से अलग करना सुविधाजनक होता है। राजनीति को इससे लाभ होता है। जब कभी राजनीति इससे उबरने की कोशिश करती है, तब उसे 'विकास' दिखता है। विकास का मतलब है कोयला और पेट्रोलियम जलाकर वायु प्रदूषण करना, नदियों का पानी निचोड़कर उनमें मैला डालना। इसके अलावा जो भी विकास की बात होती है, वह निराधार है। इसी विकास के अंतर्गत दिल्ली में 20 करोड़ रुपये की कीमत पर एक धुआं कम करने का 'स्मॉग टावर' लगा है। विकास की राजनीति से निकले उपचार तो उसके रोग से भी ज्यादा वीभत्स हैं! मीर से माफी मांगते हुए कह सकते हैं, उल्टी हो गईं सब तदबीरें कुछ न दवा ने काम किया, देखा इस बीमारी-ए-'विकास' ने आखिर काम तमाम किया! अगर हम अपने समाज को स्वस्थ देखना चाहते हैं, तो हमें विकास की सीमा तय करनी होगी। आज की राजनीति पर्यावरण की बलि चढ़ाना चाहती है। उसका दावा है कि एक बार खुशहाल हो गए, तो उसके बाद पर्यावरण भी सुधार लेंगे! लेकिन यह कोरा झूठ है। हमारी रोजी-रोटी राजनीति और विकास से नहीं, कुदरत की नेमत से है। पर्यावरण का नाश करके हम विकास का ब्याज नहीं कमा सकते हैं। राजनीति का आयकर चुकाना तो बहुत दूर की बात है!

सच तो ये है कि आप हमें ऋणी बना कर चले गए

सच तो ये है कि आप हमें
ऋणी बना कर चले गए।
जो भी फ़र्ज़ हमसे जुड़े थे, हर
फ़र्ज़ निभा कर चले गए।
कहते हैं के हर अधिकार से
जुड़ा एक फ़र्ज़ होता है।
आप हर अधिकार हमें देकर
हर फ़र्ज़ का ऋणी बना कर
चले गए।
कभी सोचा भी नहीं था के
आप यूं चले जाएंगे।
आज भी लगता है मानो अभी
लौट कर आ जाएंगे।
जिंदगी की सारी खुशियां हमें
देकर अपने जाने का ग़म दे
चले गए।
सच तो ये है के आप हमें ऋणी
बना कर चले गए।
घर की हर छोटी सी चीज़ भी
आपकी याद दिलाती है।
कितना कुछ किया आपने
हमारे लिए हर चीज गवाह बन
जाती है।
घर के हर कोने से आप ज़िंदगी
की सबसे मीठी याद देकर चले
गए।
सच तो ये है कि आप हम
ऋणी बनाकर चले गए।
कहते हैं कि पिता का दिल
कठोर होता है वो कभी नहीं
रोता है।
पर मेरे दूर जाने के गम में
पलकें भिगोते मैंने आपको
देखा है।
पिता की परिभाषा बदल
कठोरता को प्रेम में बदल कर
चले गए।
सच तो ये है की आप हमें
ऋणी बना कर चले गए।
मेरा बच्चा मेरे लिए ये करेगा
बचपन में ये हर मां बाप कहते
हैं।
कुछ भी नहीं कर पाए आपके
लिए आज भी इसलिए तड़पते
हैं।
अपने इस निस्वार्थ प्रेम में हम
सबको डूबो कर चले गए।
सच तो ये है कि आप हमें
ऋणी बना कर चले गए।
जैसे जो मांगा सब कुछ दिया
है, उम्मीद है कि ये भी देंगे।
आपके ऋण कुछ उतारने का,
उम्मीद है आप अवसर देंगे।
लौटेंगे आप फिर हमारे बीच
अनजाने ही ये उम्मीद दे चले
गए।
सच तो ये है कि आप हमें
ऋणी बना कर चले गए।

इन आदतों वाले इंसान के साथ कभी खुश नहीं रह सकते आप! सोच-समझकर करें शादी

सभी पार्टनर एक-दूसरे की आदतों को समझते हुए एडजेस्ट करते ही हैं लेकिन फिर भी कुछ आदतें ऐसी होती हैं, जिनके साथ एडजेस्ट करना मुश्किल होने के साथ आपके फ्यूचर के लिए भी खतरनाक है।

कहते हैं कि कोई भी परफेक्ट नहीं होता इसलिए रिलेशनशिप में साथ निभाने के लिए एक-दूसरे के साथ कुछ न कुछ एडजेस्ट जरूर करना होता है। सभी पार्टनर एक-दूसरे की आदतों को समझते हुए एडजेस्ट करते ही हैं लेकिन फिर भी कुछ आदतें ऐसी होती हैं, जिनके साथ एडजेस्ट करना मुश्किल होने के साथ आपके फ्यूचर के लिए भी खतरनाक है।पार्टनर में मौजूद इन आदतों के साथ आपका रिश्ता खुशी-खुशी नहीं चल सकता।ऐसे में आपके पार्टनर में भी अगर ये आदतें हैं, तो उनसे खुलकर बात करें, वरना दूरी बना लेना ही अच्छा है।

हमेशा कमियां देखना

कमियां हर इंसान में होती है लेकिन कभी-कभी कमियां इंसान के नजरिए में भी होती है। अगर आपका पार्टनर हमेशा आप में कमियां ही नोट करता रहता है, तो एक दिन उसकी यह बातें आपको अंदर से उदास कर देगी और आप आत्मविश्वास खोने लग जाएंगे।

दूसरों के सामने आपकी बुराई

जब दो लोग रिलेशनशिप में होते हैं, तो उनके बीच कई बातें होती हैं।इनमें से कुछ बातें बुरी लगने वाली भी हो सकती है लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि किसी और से बुराई की जाने लगे।ऐसा करने वाला इंसान कभी भी आपके करीब नहीं हो पाएगा।सीधी-सी बात है कि ऐसे पार्टनर पर भरोसा नहीं किया जा सकता।

दूसरों के प्रति सेक्सुअली अट्रैक्ट होना

पार्टनर के साथ प्यार के साथ ही वफादारी भी चलती है।दुनिया में कई चेहरे सुंदर, स्मार्ट हो सकते हैं।उन्हें देखना या तारीफ करना गलत नहीं है लेकिन पार्टनर के सामने या उसकी गैर-मौजूदगी में किसी को घूरते रहना या सेक्सुअली अट्रैक्ट होना आपके लिए सिग्नल है कि मौका मिलने पर वह इंसान आपको धोखा भी दे सकता है।ऐसे पार्टनर से दूरी भली।

आपकी कामयाबी से चिढ़ना

बहुत से लोग होते हैं, जो पार्टनर की कामयाबी को आसानी से डाइजेस्ट नहीं कर पाते।उन्हें लगता है कि अगर उनका पार्टनर उनसे आगे निकल रहा है, तो इससे उनकी वैल्यू कम होती जाएगी।जिसकी वजह से वे मन ही मन कॉम्पिटिशन करने लगते हैं।

अटेंशन की भूख

अपनी तारीफ हर किसी को पसंद होती है लेकिन हमेशा अटेंशन की भूख होना या फिर पार्टनर की ओर से मिलने वाली तारीफों को नजरअंदाज करके दूसरों लोगों से अटेंशन की उम्मीद लेकर उन्हें इम्प्रेस करने के हथकंडे करने वाला इंसान मैच्योर नहीं हो सकता।ऐसा व्यक्ति पार्टनर बनकर आपको कमतर ही फील कराएगा।

छोटी-छोटी चीजें पाने के बाद अंहकार

जिंदगी में कई चीजों को पाने की लालसा होती है लेकिन उन चीजों को पाने के लिए मेहनत तो जरूरी ही है।साथ ही उन चीजों को पाने के बाद जमीन पर पैर टिकाए रखना भी बेहद जरूरी है।आपको अगर ऐसा लगे कि कुछ मिलते के साथ आपका पार्टनर खुद को सबकुछ समझकर अंहकार से भर गया है या उसके स्वभाव में कोई बदलाव आ गया है, तो ऐसे पार्टनर से दूरी बना लें। आगे चलकर आपको ऐसे इंसान के साथ परेशानी के अलावा और कुछ नहीं मिलेगा।

टाइप-2 डायबिटीज पीड़ितों के लिए फायदेमंद है तेज पत्ते की ये चाय

खाने में हल्का सा मिठा स्वाद देने के साथ ही तेज पत्ता सेहत के लिए भी फायदेमंद होता है। खाने की रिच ग्रेवी जब भी बनानी होती है, तो सबसे पहले तेज पत्ता ही डाला जाता है। कई घरों में इसका इस्तेमाल रोजाना किया जाता है। आज आपको बताने वाले हैं तेज पत्ते को डाइट में शामिल करने के तरीके के बारे में। जिससे आप कई स्वास्थ्य लाभ का फायदा उठा सकते हैं। आइए, जानते हैं तेज पत्ता की चाय की विधी और फायदे।

तेज पत्ता की चाय बनाने के लिए

2-3 कप पानी
4-5 तेज पत्ते

विधि

तेज पत्ते के 3-4 टुकड़े करें और उन्हें छोटे छोटे टुकड़ों में काट लें। अगर आपके पास ताजी तेजपत्ता नहीं है, तो आप सूखे तेज पत्ते का इस्तेमाल कर सकते हैं। क बर्तन में पानी डालकर उबाल लें। इसमें तेज पत्ते डालें। इसे रात भर के लिए छोड़ दें। पानी को छान कर सुबह पीएं।

तेज पत्ता की चाय पीने के फायदे

1) स्वास्थ्य दिल
दिल के वॉल्स को स्वस्थ्य करने में मदद करता है, क्योंकि इसमें रुटिन और कैफिक एसिड होता है। इसके साथ ही यह कोलेस्ट्रॉल के स्तर को कम करने में मदद करता है, जो दिल के दौरे और स्ट्रोक के जोखिम को कम कर सकता है।

इन आदतों वाले इंसान के साथ कभी खुश नहीं रह सकते आप!

2) दर्द
इन पत्तियों में एंटी-इंफ्लामेटरी गुण होते हैं। जो मोच, जोड़ों के दर्द और गठिया सहित किसी भी तरह के दर्द को कम करने में मदद करते हैं।

3) कैंसर
कुछ अध्य्यनों के मुताबित इस पत्ते में कुछ ऐसे गुण होते हैं। जो कैंसर कोशिकाओं को नष्ट करने में मदद करते हैं। ऐसा इसलिए क्योंकि इसमें फाइटोन्यूट्रिएंट्स और कैटेचिन हैट शरीर से कैंसर कोशिकाओं को खत्म करने में मदद सकता है।

4) गला
इसकी चाय सर्दी खांसी से राहत देने में मदद करती है। सांस की समस्या के लिए तेज पत्ता फायदेमंद है।

5) एनजाइटी और स्ट्रेस
काम पर बिजी दिन के बाद एक कप तेजपत्ता की चाय पीने की कोशिश करें। यह चाय आपके सभी चिंता और आपको आराम करने में मदद करेगा।

हेल्थ के साथ बालों के लिए फायदेमंद है आंवला पाउडर, इस तरह से करें इस्तेमाल

आंवला के हेल्थ बेनिफिट्स के बारे में हर कोई जानता है। आंखें कमजोर होने पर आंवला खाने की सलाह दी जाती है। बालों के लिए भी आंवला पाउडर का इस्तेमाल किया जाता है। हालांकि ये पूरी तरह इस बात पर निर्भर करता है कि बालों पर इसे किस तरह से लगाया जा रहा है। आंवला में विटामिन सी होता है और इसमें कई एंटीऑक्सीडेंट भी होते हैं। वहीं ऐसा माना जाता है की बालों की ग्रोथ में भी आंवला मदद करता है। कई रिसर्च के मुताबिक आंवले की मदद से बालों को मजबूत बनाया जा सकता है। बालों पर आंवले के इस्तेमाल से बालों की ग्रोथ अच्छी होती है और इसमें मौजूद आयरन स्कैल्प हेल्थ को अच्छा कर सकता है। आंवला में मौजूद विटामिन सी बालों को शाइनी बना सकता है।

कैसे करें बालों पर आंवले का इस्तेमाल

1) महंदी में मिलाकर लगाएं
अगर आप बालों में महंदी का इस्तेमाल करते हैं, तो इसमें 1 चम्मच आंवला ऑयल मिला सकते हैं। ये बालों को मॉइश्चराइज करने में मदद करेगा। ध्यान दें कि इसे लगाने से सिर पर ठंडक महसूस होती है, ऐसे में आप इसे गर्म मौसम में ही लगाएं।

2) ऑयल बनाएं
सामग्री
3 बड़े चम्मच ऑलिव ऑयल
1 बड़ा चम्मच आंवला पाउडर
8-10 करी पत्ते

तरीका

तीनों चीजों को पानी में मिलाकर थोड़ी देर गैस पर रखें और एक उबाल आने दें। इसके बाद इसे छानकर अपने बालों में लगाएं। आप इसे 1 घंटे में हटा सकते हैं या फिर चाहें तो रात भर के लिए लगा रहने दें सकते हैं

3) हेयर मास्क
सामग्री
2 अंडा
1 चम्मच आंवला पाउडर

तरीका: आंवला हेयर मास्क बनाने के लिए 2 अंडों के सफेद भाग को अच्छे से फैंटे और फिर इसमें आंवला पाउडर मिक्स करें। बालों पर इसे आधे से एक घंटे के लिए लगाएं और ठंडे पानी से धो लें। ये बालों को पोषण देने में मदद करेगा। जिससे आपके बाल नैचुरली खूबसूरत नजर आएंगे।

आंवला पाउडर में जड़ी बूटियां मिलाएं

शिकाकाई, रीठा और भृंगराज पाउडर के साथ आंवला पाउडर मिला कर लगाने से बाले अच्छे होते हैं। इन सभी चीजों का एक चम्मच गुनगुने पानी में भिगोएं। इसके बाद पेस्ट को अपने बालों में अच्छी तरह से लगाएं। आगर आपको आंवला सूट नहीं करता है, तो आप इसका इस्तेमाल ना करें। साथ ही किसी भी टिप को अपनाने से पहले पैच टेस्ट जरूर करें।

बच्चों के लिए दही डालकर बनाएं चटपटी अरबी की सब्जी

आमतौर पर ज्यादातर बच्चे खाने-पीने के मामले में बहुत ही नखरे करते हैं. जैसे पौष्टिक सब्जी उन्हें पसंद नहीं आती. अरबी की सब्जी भी इसी लिस्ट में शामिल है लेकिन आज हम आपको अरबी की सब्जी बनाने की ऐसी रेसिपी बता रहे हैं, जो आपको ही नहीं बच्चों को भी बेहद पसंद आएगी।आइए, जानते हैं रेसिपी-

सामग्री

अरबी- 250 ग्राम ' गाढ़ा दही- 1 कप ' अजवाइन- 1/2 चम्मच
कश्मीरी लाल मिर्च पाउडर- 1-1/2 चम्मच ' हल्दी पाउडर- 1/4 चम्मच
धनिया पाउडर- 1 चम्मच
गरम मसाला पाउडर- 1 चम्मच
बारीक कटी धनिया पत्ती- 2 चम्मच
नमक- स्वादानुसार
तेल- आवश्यकतानुसार
पानी- 1 कप

विधि :

अरबी को अच्छी तरह से साफ करके धो लें। कुकर में थोड़े-से पानी और चुटकी भर नमक के साथ डालें। एक सीटी लगाएं। कुकर का प्रेशर अपने-आप निकलने दें। अरबी का छिलका छीलकर उसे लंबाई में काट लें। दही को अच्छी तरह से फेंट कर रख लें। पैन में तेल गर्म करें और उसमें अजवाइन डालें। 10 सेकेंड के बाद उसमें लाल मिर्च पाउडर, हल्दी पाउडर और धनिया पाउडर डालकर मिलाएं। पैन में अरबी डालकर मिलाएं। धीमी आंच पर लगातार मिलाते हुए अरबी को 10 से 12 मिनट तक पकाएं। आधा कप पानी डालें और पांच से सात मिनट तक पकाएं। अब दही को पैन में डालें और उबाल आने तक लगातार चलाते हुए पकाएं। गरम मसाला और धनिया पत्ती डालकर मिलाएं और गैस बंद कर दें। परांठा व सलाद के साथ सर्व करें।

जैसलमेर ट्रिप को बनाएं रोमांचक, इन एडवेंचर स्पोर्ट्स को करें ट्राई

इन दिनों हर कोई जमकर ट्रिप प्लान कर रहा है। कोई पहाड़ तो कोई समंदर की और रुख कर रहा है। वहीं कुछ लोग ऐसे भी हैं जो एडवेंचर ट्रिप प्लान कर रहे हैं। एडवेंचर ट्रिप जितने खतरनाक होते हैं, उतने ही एक्साइटिंह भी होते हैं। ऐसे में आज आपको बताने वाले हैं कुछ ऐसे एडवेंचर स्पोर्ट्स के बारे में जिसका लुफ्त उठाना कई लोगों की ख्वाइश है। जैसलमेर के एडवेंचर स्पोर्ट्स देशभर में काफी पॉपुलर हैं। ऐसे में आप जैसलमेर जाने का प्यान बना रहे हैं, तो इस एडवेंचर स्पोर्ट्स को एक बार जरूर ट्राई करें। आइए, जानते हैं।

कैमल रेसिंग

इस बात से हर कोई वाखिफ है कि ऊंट को रेगिस्तान की शान माना जाता है। ऐसे में हार्स और कैमल रेसिंग जैसलमेर में सबसे पॉपुलर है, हालांकि पूरे राजस्थान में ये खूब पॉपुलर है। इस रेस को देखने दूर-दूर से लोग आते हैं। कैमल रेसिंग आम दिनों के अलावा एनुअल डेजर्ट फेस्टिवल में भी होता है, जो कि फरवरी में आयोजित किया जाता है।

क्वाड बाइकिंग

क्वाड बाइकिंग का हर कोई दीवाना है, लड़कों से लेकर लड़कियों तक हर कोई इसका लुफ्त उठाता है। क्वाड बाइकिंग ना सिर्फ एक्साइटिंग बल्कि काफी एडवेंचर्स भी होती है। सीजन के दौरान आपको यहां अच्छा खासा डिस्काउंट मिल सकता है। इसके अलावा आप एटीवी सवारी का आनंद ले सकती है।

जिप लाइनिंग

ज्यादातर युवा इसे करने से डरते हैं, वहीं कई लोगों की इसे करने की ख्वाहिश होती है कि वह जिंदगी में इस स्पोर्ट को एक बार जरूर करना चाहते हैं। जिप लाइनिंग करते हुए रेगिस्तान का खूबसूरत नजारा देखने को मिलता है। डेयोर कैंप में 250 मीटर से अधिक फैली जीप लाइन का आनंद ले सकते हैं।

हॉट एयर बैलून

रेगिस्तान की खूबसूरती देखने के साथ अगर आप रिलैक्स करना चाहते हैं, तो हॉट एयर बैलून जैसे रोमांचक एक्टिविटी का मजा जरूर लें। सुर्यास्त और सुर्योदय के दौरान ये जगह और भी खूबसूरत लगती है।

डेजर्ट ड्यून सफारी

दुबई सफारी को देख अगर आपको भी सफारी का मजा उठाना है, वो भी बिना दुबई गए तो आप जैसलमेर जा सकते हैं। जैसलमेर से लगभग 45 किलोमीटर दूर सिर्फ रेत ही दिखाई देती है। जैसलमेर में लामा टूर एंड ट्रैवल्स कंपनी ने देश में पहली बार डेजर्ट ड्यून सफारी का आयोजन किया था। वहीं अब लोगों के बीच यह आकर्षण का केंद्र बन गया है।

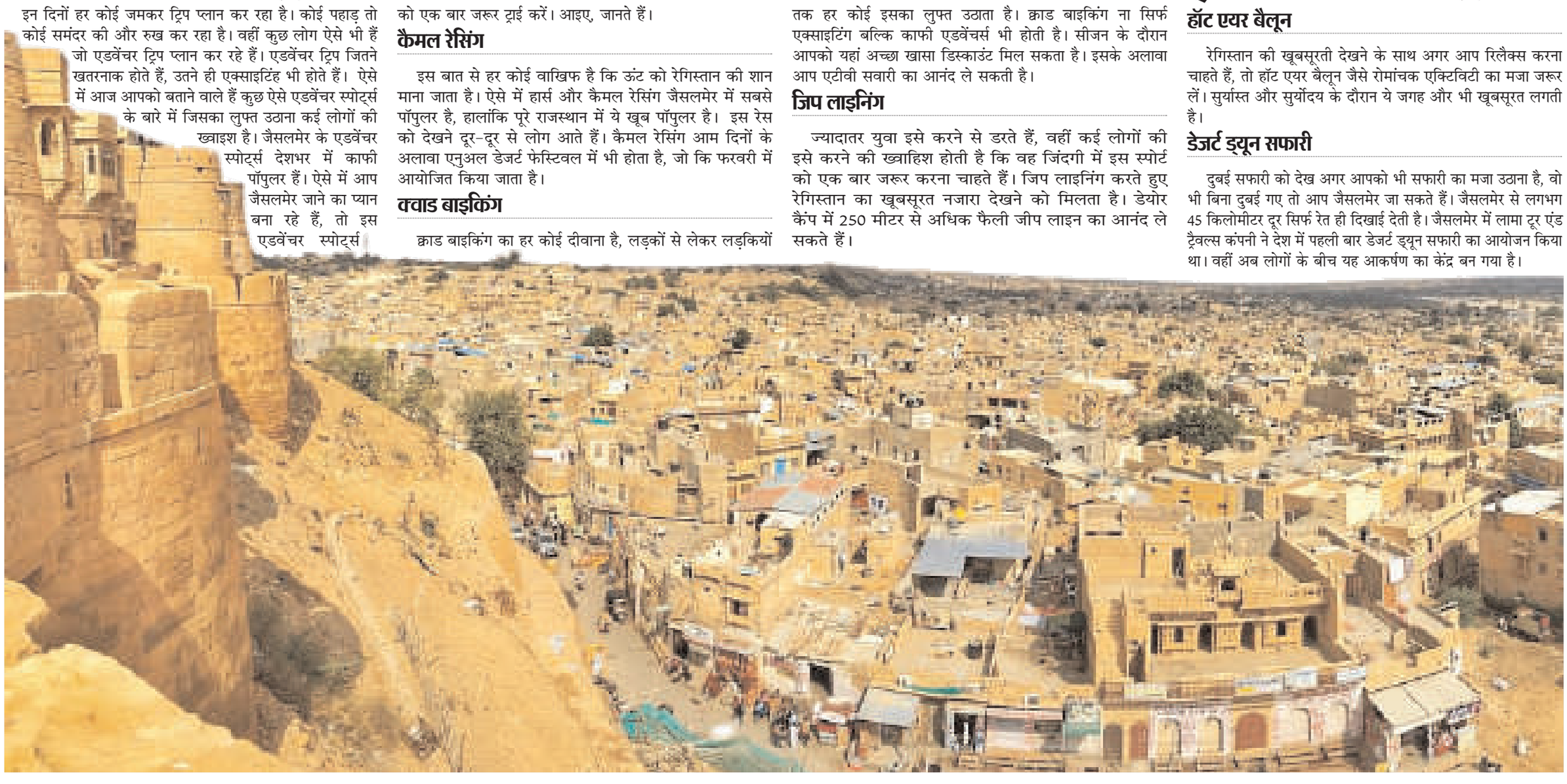

यहां अल्लाह हू अकबर और हर-हर महादेव के नारे लगते रहेंगे: राकेश टिकैत

मुजफ्फरनगर में किसान महापंचायत, योगेंद्र यादव ने बताए- योगी सरकार के 5 पाप

आईटीडीसी इंडिया ई-प्रेस/ आईटीडीसी न्यूज मुजफ्फरनगर।

केंद्र सरकार के 3 नए कृषि कानूनों के विरोध में उत्तर प्रदेश के मुजफ्फरनगर में रविवार को संयुक्त किसान मोर्चे ने किसान महापंचायत की। यहां भारतीय किसान यूनियन के राष्ट्रीय प्रवक्ता राकेश टिकैत जमकर गरजे। उन्होंने 10 फीट ऊंचे मंच से कहा कि इस सरकार ने पूरे देश को बेच दिया। अब लड़ाई मिशन यूपी और मिशन उत्तराखंड की नहीं, बल्कि देश को बचाने की है। यह आंदोलन देश के किसानों के बूते लड़ा जाएगा। आगे राकेश टिकैत ने कहा कि हम वो नहीं हैं, जो झोला उठाकर चल देंगे। मैं किसान हूं और किसान ही रहूंगा। आखिरी दम तक किसानों के साथ रहूंगा। किसानों के हक की लड़ाई के लिए हम हमेशा किसानों के साथ रहे हैं, और मरते दम तक किसानों की लड़ाई लड़ेंगे। बता दें कि इससे पहले आंदोलन में आक्रोशित किसानों ने शहर में लगे सीएम के बड़े-बड़े होर्डिंग को फाड़कर फेंक दिया। इस बीच करीब 2 घंटे इंटरनेट सेवा बंद कर दी गई।

अल्लाह हू अकबर और हर-हर महादेव के नारे लगते रहेंगे

वहीं, महापंचायत में राकेश टिकैत ने कहा कि अल्लाह हू अकबर और हर-हर महादेव के नारे हमेशा लगते रहे हैं और लगते रहेंगे। हम यहां दंगा नहीं होने देंगे। यह देश हमारा है, यह प्रदेश हमारा है, यह जिला हमारा है। लाल किले पर हमारे लोग नहीं गए। देश में कैमरा और कलम पर बंदूक का पहरा है। आगे भी आंदोलन जारी रहेगा। उन्होंने कहा कि यह याद करते रहना कि हम वहां से हटेंगे नहीं। साढ़े 450 रुपए कुंतल गन्ने का रेट चाहिए। रूस्क की गारंटी चाहिए। पूरे देश में संयुक्त मोर्चा आंदोलन करेगा। किसानों की यह लड़ाई आप (किसान) के दम पर लड़ी जाएगी। आज आप मुजफ्फरनगर में आए और पूरे देश को किसानों की ताकत

दिखाई। 20 लाख की भीड़ यहां जुटी।

सरकार ने किसानों के साथ सभी को धोखा दिया

राकेश टिकैत ने कहा कि देश की सरकार ने किसानों के साथ सभी को धोखा दिया है। रेल, बिजली, महत्वपूर्ण प्रतिष्ठान, सड़कें, स्न्रष्ट्ढ के गोदाम, बंदरगाह प्राइवेट कंपनियों को बेच दिए गए हैं। अब खेती-बाड़ी भी इन कंपनियों को बेचने की तैयारी है। एक तरह से पूरा भारत बिकाऊ हो गया है। उन्होंने कहा कि शुगर मिलों पर गन्ना किसानों का 12 हजार करोड़ रुपया बकाया है। पिछली दो सरकार ने गन्ने का रेट बढ़ाया है, लेकिन योगी सरकार ने फूटी कौड़ी तक नहीं बढ़ाई। जब हम किसानों के हित की बात करते हैं तो सरकार इसे राजनीति बताती है।

जब तक नहीं वापस होगा कृषि कानून, नहीं हटेंगे दिल्ली के बॉर्डर से

उन्होंने कहा कि पूरे देश का निजीकरण हो रहा है। ऐसे में रोजगार के साधन खत्म हो रहे हैं। यह लड़ाई सिर्फ किसानों की नहीं, बल्कि नौकरीपेशा, मजदूर, मेहनतकश समेत सभी वर्गों की है। टिकैत ने स्पष्ट कह दिया है कि जब तक कृषि कानून वापस नहीं होंगे, वह दिल्ली के बॉर्डर से नहीं हटेंगे। चाहें हमारी कब्रगाह ही बॉर्डर पर क्यों न बनानी पड़े। इसके लिए सरकार को वोट की चोट देनी होगी। लड़ाई किसानों समेत सभी वर्गों के दम पर लड़ी जाएगी। आगे बोलते हुए राकेश टिकैत ने कहा कि यह सरकार तोड़ने का काम करती है और हम जोड़ने का काम करते हैं। हमने उस समय भी कह दिया था कि कब्रगाह हमारी यहीं बनेगी। इस तरह की सरकार यदि देश में होगी तो यह दंगा करवाने का काम करेंगे।

योगेंद्र ने बताए योगी सरकार के 5 पाप

वहीं, इससे पहले स्वराज अभियान के नेता योगेंद्र यादव ने कहा कि सौ सुनार की, एक लोहार की। आज किसानों ने जवाब दे दिया सबको। जो कह रहे थे कि ये आंदोलन ढीला पड़ गया है। आज किसानों की भीड़ से मुजफ्फरनगर शहर ही छोटा पड़ गया।

उन्होंने कहा कि कर्जमाफी के नाम पर ढोंग किया। कर्ज करोड़ों किसानों का था। सरकार ने 86 लाख का माफ करने का वादा किया, मगर ऋझ्ढ में आधे किसानों का कर्ज माफ न होने की जानकारी हुई।

सरकार ने 4 साल से गन्ना रेट नहीं बढ़ाया। पिछला बकाया तक नहीं दिया। 7295 करोड़ पिछले सीजन का चीनी मिलों पर बकाया है। 8700 करोड़ का ब्याज गन्ना किसानों का सरकार पर उधार है।

गेहूं की 18 फीसदी सरकारी खरीद हुई। सरसों की एक फीसदी, चने की 0, मूंग, मसूर की 0, मक्का की 0 फीसदी खरीद की।

पीएम फसल बीमा उत्तर प्रदेश में 2017 में 72 लाख किसानों का था। आज 72 से हटकर 47 लाख किसानों का रह गया है। कंपनियों ने बीमा के नाम पर ढाई हजार करोड़ का मुनाफा कमाया।

प्रियंका ने ट्वीट कर किया समर्थन

कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी ने ट्वीट कर किसान महापंचायत का समर्थन किया है। उन्होंने कहा कि किसान इस देश की आवाज हैं। किसान देश का गौरव हैं। किसानों की हुंकार के सामने किसी भी सत्ता का अहंकार नहीं चलता। खेती-किसानी को बचाने और अपनी मेहनत का हक मांगने की लड़ाई में पूरा देश किसानों के साथ है।

आखिर एक मंच पर आईं गठवाला-बालियान खाप: मुजफ्फरनगर में भाजपा विधायक उमेश मलिक के काफिले पर हमले के बाद गठवाला और बालियान खाप के बीच बढ़ी दूरियों को मिटाने के लिए हरसंभव कोशिशें जारी हैं। उस समय इनमें मनमुटाव हो गया था। इन दूरियों को कम करने के लिए मुजफ्फरनगर में किसान-मजदूर महापंचायत की अध्यक्षता गठवाला खाप के थाम्बेदार श्याम सिंह मलिक से कराई जा रही है। गठवाला खाप का पश्चिमी उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पंजाब और राजस्थान में अछा खासा वर्चस्व है। वेस्ट यूपी और हरियाणा में गठवाला गोत्र के गांव बहुतायत में हैं।

नरेश की पहल रंग लाई: चूंकि गठवाला गोत्र, मलिक गोत्र से निकला हुआ है, इसलिए गठवाला खाप ने विधायक काफिले पर हमले का विरोध किया। इसके बाद गठवाला के बालियान गोत्र से मनमुटाव हो गए। बालियान खाप के थाम्बेदार स्वयं भाकियू अध्यक्ष नरेश टिकैत हैं। शुरुआत में गठवाला खाप ने यह तक कह दिया कि वह इस महापंचायत में नहीं जाएंगे। इसके बाद बालियान थाम्बेदार नरेश टिकैत ने गठवाला थाम्बेदार को मनाने की पहल की। 5 दिन पहले दोनों दोनों खाप के सुर एक जैसे हो गए। महापंचायत स्थल पर सुरक्षा संबंधी भारी बंदोबस्त किए गए हैं। रैपिड एक्शन फोर्स (क्र्रस्न) व पीएसी समेत 10 कंपनी फोर्स लगाई गई है। पुलिस मुख्यालय से 3 ढ्ढत्र, 11 एडिशनल एसपी, 16 ष्ठस्क्क लगाए गए हैं। 300 पुलिसकर्मी यातायात व्यवस्था के लिए लगाए गए हैं। यूपी पुलिस के 2500 जवान महापंचायत स्थल, शहर और मुख्य मार्गों पर तैनात किए गए हैं।

सभी किसान अपने ही खून, उनके दर्द और नजरिए को समझने की जरूरत: वरुण गांधी

लखनऊ। पीलीभीत से भाजपा सांसद वरुण गांधी ने कृषि कानूनों के खिलाफ आंदोलन कर रहे किसानों का समर्थन किया है। वरुण गांधी ने सोशल मीडिया पर लिखा कि मुजफ्फरनगर में लाखों किसान धरना प्रदर्शन में जुटे हैं। वे हमारे अपने खून हैं। हमें उनके साथ सम्मानजनक तरीके से फिर से जुड़ने की जरूरत है। उनके दर्द, उनके नजरिए को समझें और जमीन तक पहुंचने के लिए उनके साथ काम करें। वरुण गांधी पहले और इकलौते BJP सांसद हैं, जिन्होंने खुलकर किसानों का समर्थन किया है। इससे पहले भी वरुण गांधी अपनी ही पार्टी और सरकार के खिलाफ बोलते नजर आए हैं, जिससे पार्टी के लिए असहज स्थिति पैदा हुई है।

वरुण गांधी के पांच बयान... जो चर्चा में रहे

साल 2013: वरुण गांधी भाजपा के पश्चिम बंगाल के प्रभारी थे। उस समय कोलकाता के परेड ग्राउंड में तब प्रधानमंत्री पद के उम्मीदवार नरेंद्र मोदी की रैली थी। रैली का पूरा प्रबंध वरुण ने ही किया था। पश्चिम बंगाल में भाजपा के जनाधार के हिसाब से अच्छी रैली हुई थी, लेकिन वरुण ने अगले दिन अखबार वालों से कहा कि रैली नाकाम रही। यहीं से भाजपा और वरुण गांधी के रिश्तों में कड़वाहट की शुरुआत हुई।

साल 2014: सुल्तानपुर लोकसभा सीट से वरुण चुनाव लड़ने गए, तो पीलीभीत से अपने कार्यकर्ताओं को साथ ले गए। स्थानीय भाजपा नेताओं को ज्यादा तवज्जो नहीं दी। इसके अलावा उन्होंने अपने संसदीय क्षेत्र में किसी भी भाजपा नेता को प्रचार नहीं करने दिया। चुनाव प्रचार के दौरान एक दिन वरुण जब मंच से बोल रहे थे, तो मोदी-मोदी के नारे लगने लगे। इस पर उन्होंने मंच से ही डांटा कि मोदी-मोदी क्या है? इसके बाद जब अमित शाह अध्यक्ष बने, तो उन्हें पार्टी के महासचिव पद से हटा दिया गया।

साल 2015: कानपुर के एक कार्यक्रम में वरुण गांधी ने कहा था कि दूसरों दलों की तुलना में भाजपा में युवाओं को आने का मौका कम मिलता है। इस बयान को मोदी की युवा नीति के खिलाफ माना गया।

साल 2017: इंदौर में वरुण गांधी ने रोहित वेमुला की सुसाइड का मुद्दा उठाया। उन्होंने कहा कि रोहित वेमुला का सुसाइड नोट पढ़कर उन्हें रोना आ गया। किसानों की आत्महत्या के मुद्दे पर कहा कि देश में कर्ज वसूली में भेदभाव किया जा रहा है। अमीरों को तो रियायत दे दी जाती है, लेकिन गरीब को जान देनी पड़ती है।

बिहार माध्यमिक शिक्षक पात्रता परीक्षा के योग्य उम्मीदवारों ने पटना में शिक्षक दिवस के अवसर पर नौकरी की मांग को लेकर विरोध प्रदर्शन के दौरान नारेबाजी की।

न्यूज ब्रीफ

पाकिस्तान के बलूचिस्तान में फिदायीन हमला: 3 पैरामिलिट्री गार्ड की मौत, 18 पुलिसवालों समेत 20 घायल

इस्लामाबाद।आकिस्तान के बलूचिस्तान में रविवार को फिदायीन हमले में तीन पैरामिलिट्री गार्ड्स की मौत हो गई। क्वेटा में मस्तुंग रोड पर फ्रंटियर कॉर्प्स चेकपोस्ट पर हुए हमले में 20 लोग घायल भी हुए हैं। घायलों में 18 सुरक्षाकर्मी हैं। पुलिस ने बताया है कि घायलों को शेख जैद अस्पताल ले जाया गया है। इनमें से कई की हालत गंभीर है। पुलिस और बचाव दल घटनास्थल पर पहुंच गए हैं। आसपास की जगहों की तलाशी ली जा रही है। आतंकी संगठन तहरीक-ए-तालिबान पाकिस्तान ने इस हमले की जिम्मेदारी ली है। शनिवार को तालिबान के प्रवक्ता जबीहुल्ला मुजाहिद ने कहा था कि ञ्जञ्जक्क का मुद्दा ऐसा है, जिसे इमरान खान सरकार को हल करना चाहिए, अफगानिस्तान का नहीं।

धमाके में 5 किलोग्राम विस्फोटक इस्तेमाल होने का आशंका:मीडिया रिपोर्ट्स में बताया गया है कि हमला फ्रंटियर कोर की गाड़ी को निशाना बनाकर किया गया था, जो इलाके में पट्रोलिंग कर रही थी। ष्ठढ्ढत्र के हवाले से धमाके में 5 किलोग्राम विस्फोटक इस्तेमाल होने की बात कही गई है।

प्रधानमंत्री इमरान खान ने हमले की निंदा की: पाकिस्तान के प्रधानमंत्री इमरान खान ने हमले की निंदा की है। उन्होंने ट्वीट करके कहा कि मेरी संवेदना शहीदों के परिवारों के साथ है और घायलों के ठीक होने की प्रार्थना करता हूं। विदेशी समर्थित आतंकवादियों को विफल करके हमें सुरक्षित रखने के लिए सुरक्षा बलों और उनके बलिदान को मेरा सलाम है।

क्वेटा में बम धमाके में 2 पुलिसकर्मियों की मौत हुई थी:कुछ दिनों पहले ही पाकिस्तान के क्वेटा में बम धमाके में 2 पुलिसकर्मियों की मौत हो गई थी। 13 लोग घायल हुए थे। यह बम ब्लास्ट शहर की उसी मशहूर सेरेना होटल के करीब हुआ, जहां करीब चार महीने पहले आतंकी हमला हुआ था। उस घटना में कई लोग मारे गए थे। रिपोर्ट के मुताबिक, बम एक मोटरसाइकिल में छिपाकर रखा गया था। जैसे ही पुलिस की एक गश्ती वैन वहां से गुजरी तो ब्लास्ट हो गया। दो पुलिसकर्मियों की मौके पर ही मौत हो गई। घटना में सड़क से गुजर रहे चार राहगीर भी घायल हुए।

केंद्रीय कृषि मंत्री नरेंद्र सिंह तोमर को कर्नाटक के कृषि मंत्री बी सी पाटिल द्वारा मुख्यमंत्री बसवराज बोम्मई के रूप में सम्मानित किया जा रहा है, केंद्रीय कृषि राज्य मंत्री शोभा करंदलाजे बेंगलुरु के विधान सौध में मुख्यमंत्री रायता विद्या निधि कार्य म के उद्घाटन के दौरान देखती हैं।

तंत्र-मंत्र ने ले ली जान

राजस्थान में 12वीं की छात्रा तंत्र-मंत्र से कर रही थी बड़ी बहन का इलाज, 18 घंटे के ड्रामे के दौरान मौत हो गई

आईटीडीसी इंडिया ई-प्रेस/ आईटीडीसी न्यूज चित्तौड़गढ़

राजस्थान के चित्तौड़गढ़ में तंत्र-मंत्र से इलाज के चक्कर में 30 साल की महिला की जान चली गई। एक परिवार 18 घंटे तक कमरा बंद करके टोना-टोटका करता रहा। पड़ोसियों की सूचना पर आई पुलिस ने जबरदस्ती दरवाजा खुलवाया, पर तब तक महिला की मौत हो गई थी। पुलिस के पहुंचने पर तंत्र-मंत्र कर रही 12वीं की छात्रा पुलिस को भी धमकाती रही।

2 कमरों में बंद थे 25 लोग: घटना चर्च बस्ती की निवासी गीताबाई के घर की है। गीताबाई के पति मोहनलाल का निधन हो चुका है और उनकी 5 बेटियां हैं। 30 साल की बेटी सुनीता भीम ब्वायर से अपने मायके आई हुई थी। उसकी तबीयत बिगड़ी तो मां और बहनों ने टोने-टोटके से इलाज शुरू कर दिया। ये सब सबसे छोटी बेटी कर रही थी, जो 12वीं में पढ़ती है। पड़ोसियों ने बताया कि घर के सदस्यों का मानना है कि सबसे छोटी बेटी में गीताबाई के पति मोहनलाल की आत्मा आती है। पड़ोसियों ने बताया कि कमरे से आवाजें आ रही थीं और ऐसा लग रहा था कि ये लोग मारपीट कर रहे हों। करीब 18 घंटे तक सुनीता का तंत्र-मंत्र से इलाज चलता रहा, तबीयत बिगड़ी तो पुलिस को बुलाया गया।

पुलिस को भी दिखाते रहे आत्मा का डर

पुलिस जब मौके पर पहुंची तो उसे भी ये परिवार टोने-टोटके का डर दिखाने लगा। कई घंटों तक ये लोग पुलिस को सुनीता को हाथ लगाने से रोकते रहे। पुलिस ने जबरदस्ती इस परिवार को घर से बाहर निकाला। दो कमरों में से करीब 25 लोग बाहर निकले। इनमें बच्चे और महिलाएं भी थीं। पुलिस सुनीता को लेकर अस्पताल पहुंची, लेकिन उसे बचाया नहीं जा सका। अस्पताल के डॉ. अनिल जाटव और अन्य मेडिकल स्टाफ भी मौके पर पहुंचा था। डॉक्टर जाटव के मुताबिक परिवार मानसिक रोगियों की तरह व्यवहार कर रहा था। ष्ठस्क्क झाबरमल यादव ने बताया कि गीताबाई को लगता है कि उसके परिवार पर उसकी बहन की बेटी ने कोई टोना-टोटका कर दिया है और इसीलिए परिवार की स्थिति खराब हो गई है। झाबरमल यादव ने कहा कि महिला की मौत बीमारी से हुई या उससे मारपीट की गई, इसका पता पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट से चलेगा। उन्होंने कहा कि महिला के शरीर पर चोट के निशान थे। पड़ोसियों का कहना है कि ये लोग आपस में मारपीट कर रहे थे।

इराक में ISIS का घातक हमला:13 पुलिसकर्मियों की मौत और कई घायल

आईटीडीसी इंडिया ई-प्रेस/ आईटीडीसी न्यूज बगदाद

इराक में ISIS के हमले में 13 पुलिसकर्मियों की मौत हो गई और कई घायल हुए हैं। किरकुक शहर से करीब 65 किलोमीटर दक्षिण में अल-रशद के इलाके में हमला आधी रात के बाद हुआ। रिपोर्ट के मुताबिक, कुछ घायलों की हालत गंभीर है, जिससे मरने वालों की संख्या बढ़ सकती है। इराकी पुलिस के एक सीनियर अधिकारी ने बताया कि ISIS के दहशतगर्दों ने पुलिस चौकी को निशाना बनाया। उन्होंने कहा कि जिहादी यहां इराक की सेना और पुलिस को लगातार निशाना बनाते रहते हैं, लेकिन यह हमला इस साल ISIS के सबसे घातक हमलों में से एक था।

जुलाई में आत्मघाती बम धमाके में 35 की मौत हुई: इसी साल जुलाई में इराक के सदर शहर में आत्मघाती बम धमाके में 35 लोगों की मौत हुई थी और 60 से ज्यादा लोग जख्मी हुए थे। धमाका एक बाजार में हुआ। ईद होने की वजह से यहां काफी भीड़ थी। ढ्डस्ढ्डस् ने टेलीग्राम के जरिए संदेश शेयर करके इस हमले की जिम्मेदारी ली थी। बीते अप्रैल में भी इराक के सदर शहर के एक बाजार में कार में धमाका हुआ था। इसमें 4 लोग मारे गए थे और 20 जख्मी हुए थे। इस हमले की जिम्मेदारी भी ढ्डस् ने ही ली थी।

अंगरक्षक से बोल दिया था कि घायल हो जाऊं तो सिर में गोली मार देना, मैं समर्पण नहीं करूंगा: सालेह

लंदन।अफगानिस्तान के पंजशीर में तालिबानियों के खिलाफ बगावत की अगुआई कर रहे अमरुल्लाह सालेह ने कहा कि वो आत्मसमर्पण करना नहीं चाहते। निर्णायक जंग का ऐलान करते हुए सालेह बोले- मैंने अपने गार्ड से कह दिया है कि अगर मैं घायल हो जाऊं तो मुझे सिर में दो गोलियां मार देना, क्योंकि मैं तालिबान के आगे घुटने नहीं टेकना चाहता। लंदन के न्यूज पेपर डेली मेल में 48 साल के सालेह ने लिखा है, संकट के समय जिन नेताओं ने अफगानिस्तान को छोड़ दिया, मेरा मानना है कि उन्होंने अपनी जमीन से धोखा किया है। जिस रात काबुल तालिबानियों के कब्जे में आया, मुझे वहां के पुलिस चीफ ने फोन किया। उन्होंने बताया कि जेल में विद्रोह मच गया है और तालिबानी कैदी भागने की कोशिश कर रहे हैं।

सऊदी अरब पर मिसाइल हमला:तेल के भंडार वाले इलाकों पर तीन मिसाइलें दागी गईं, सऊदी ने इन्हें बीच हवा में नष्ट किया; दो बच्चे घायल

नई दिल्ली।सऊदी अरब पर शनिवार को तीन मिसाइलों से हमला किया गया। इन्हें तेल के भंडारों वाले सऊदी के पूर्वी इलाकों की तरफ दागा गया था। तीनों मिसाइलों को सऊदी अरब ने हवा में ही नष्ट कर दिया लेकिन दम्माम शहर में छर्रों के बिखरने से दो सऊदी बच्चे घायल हो गए और 14 घरों को हल्का नुकसान हुआ है। सऊदी अरब के पड़ोसी देश यमन के हूती विद्रोही लंबे समय से सऊदी को निशाना बना रहे हैं। इन्हें ईरान का समर्थन मिला हुआ है। सऊदी अरब में हूती सेना से लड़ रहे गुट ने आरोप लगाया है शनिवार का हमला भी हूती विद्रोहियों ने ही किया है। हालांकि हूती विद्रोहियों ने अभी तक हमले की जिम्मेदारी नहीं ली है। सऊदी अरब की सेना ने बताया कि हूती विद्रोहियों ने तीन बैलिस्टिक मिसाइल और बम से लदे ड्रोन से हमला किया था। हमले का अलर्ट नागरिकों को पहले ही दे दिया गया था। हमले के लिए तेल के भंडार वाले पूर्वी इलाकों और दक्षिण में जाज़न और नजरान शहर को निशाना बनाया गया।

अफगानिस्तान के काबुल में एक विरोध प्रदर्शन के दौरान तालिबान शासन के तहत अपने अधिकारों की मांग करने के लिए महिलाएं इकट्ठा होती हैं। तालिबान ने 1996 से 2001 तक देश पर पिछली बार शासन करने की तुलना में एक समावेशी सरकार और इस्लामी शासन के अधिक उदार रूप का वादा किया है। लेकिन कई अफगान, विशेष रूप से महिलाएं, गहराई से संशय में हैं और पिछले दो दशकों में प्राप्त अधिकारों के रोलबैक से डरते हैं।

न्यूज ब्रीफ

अमेरिकी ओपन : निशिकोरी को हराकर जोकोविच चौथे दौर में पहुंचे

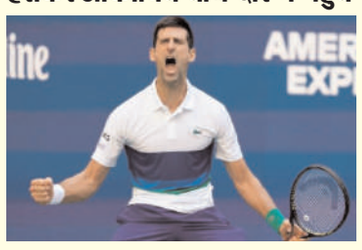

न्यूयार्क। सर्बियाई स्टार नोवाक जोकोविच ने शनिवार को यहां अमेरिकी ओपन के तीसरे दौर में केई निशिकोरी को हराकर अगले दौर में प्रवेश किया। जोकोविच ने फ्लशिंग मिडोज पर लगातार 14वीं बार खेलते हुए निशिकोरी से पिछड़ने के बाद वापसी करते हुए 6-7 (4), 6-3, 6-3, 6-2 से जीत दर्ज कर करियर ग्रैंड स्लैम के अपने सपने को पूरा करने की ओर मजबूत कदम बढ़ाया। अब वह अमेरिका के 20 साल के वाइल्ड कार्ड से प्रवेश करने वाले जेनसन ब्रूक्सबी और 21वें वरीय अस्लान कारात्सेव के बीच होने वाले मुकाबले के विजेता से भिड़ेंगे। मैच के दौरान वह अपने हाव भाव को व्यक्त करने में झिझके नहीं। वह इस दौरान अपनी छाती थपथपाते हुए और मुठ्ठी को ऊपर उठाते हुए दिखे। विश्व रैंकिंग में पहले स्थान पर काबिज इस खिलाड़ी ने कहा, ''मैं कोर्ट पर इस तरह के भावुक क्षणों को दिखाने की योजना नहीं बनाता। भावनाएं बस दिख जाती हैं।% चौंतीस वर्षीय इस खिलाड़ी ने कहा, 'जब आप कड़े मुकाबले में हो और जब आपको लगे कि यह क्षण बहुत महत्वपूर्ण है तो आप इन्हें बाहर निकालना चाहते हो और आप ऐसा कर देते हो। इस साल ग्रैंड स्लैम मुकाबलों में जोकोविच की यह 24वीं जीत है। इस साल फरवरी में आस्ट्रेलियाई ओपन, जून में फ्रेंच ओपन और जुलाई में विम्बलडन खिताब जीतने वाले जोकोविच शानदार फार्म में हैं। जोकोविच 1969 के बाद कैलेंडर ग्रैंड स्लैम पूरा करने वाला पहला पुरुष खिलाड़ी बनने की ओर बढ़ रहे हैं। रॉड लीवर ने 1969 में सत्र के सभी चारों ग्रैंडस्लैम जीते थे और स्टेफी ग्राफ 1988 में ऐसा करने वाली महिला खिलाड़ी थीं।

चेन्नईयिन एफसी ने हंगरी के कोमान को शामिल किया

चेन्नई। दो बार की इंडियन सुपर लीग (आईएसएल) चैम्पियन चेन्नईयिन एफसी नेशनिवार को हंगरी के मिडफील्डर व्लादिमीर कोमान से एक सत्र का करार करने की घोषणा की। हंगरी का अंतरराष्ट्रीय खिलाड़ी क्लब से करार करने वाला छठा और अंतिम विदेशी खिलाड़ी है। कोमान ने कहा- मैं चेन्नईयिन से जुड़कर खुश हूं क्योंकि यह मेरे लिये पूरी तरह से नया माहौल है और यह नया अनुभव भी होगा। मैं टीम को सफलता दिलाने में मदद के लिये अपना सर्वश्रेष्ठ करना चाहूंगा और अपने दर्शकों को खुश करूंगा और गर्व महसूस कराऊंगा।

50 मीटर एयर राइफल मुकाबले से बाहर हुई अवनि

612.0 अंक के साथ 28वें नंबर पर रही, क्वालीफाई राउंड में ही बाहर हो गईं; अब तक जीत चुकीं 2 मेडल

आईटीडीसी इंडिया ई-प्रेस/ आईटीडीसी न्यूज टोक्यो

टोक्यो पैरालिंपिक में 50 मीटर एयर राइफल प्रतिस्पर्धा में भारत को निराशा हाथ लगी है। गोल्डन गर्ल अवनि लेखरा आज अपने साथी सिद्धार्थ बाबू और दीपक सैनी के साथ क्वालीफाई राउंड में ही बाहर हो गईं। छठी सीरीज में भारत की तरफ से अवनि लेखरा ने 612.0 अंक हासिल किए। वह 28वें नंबर रहीं। सिद्धार्थ 617.2 अंक हासिल कर 9वें नंबर रहे। दीपक सैनी 602.2 अंकों के साथ 46वें स्थान पर रहे। इस तरह तीनों भारतीय निशानेबाज बाहर हो गए।

इससे पहले जयपुर की रहने वाली अवनि लेखरा ने टोक्यो पैरालिंपिक में 10 मीटर एयर राइफल में गोल्ड और 50 मीटर एयर राइफल महिला प्रतिस्पर्धा में ब्रॉन्ज मेडल जीत चुकी है। अवनि एक ओलिंपिक में दो मेडल जीतने वाली देश की पहली खिलाड़ी बन गई हैं।

दादा बोले- पोती के संघर्ष की जीत हुई

अवनि के दादा जी आर लेखरा ने कहा कि उनकी पोती के संघर्ष की जीत हुई है। पिछले कई सालों से अवनि की जी तोड़ मेहनत का ही नतीजा है कि उसने दुनियाभर में भारत का परचम लहराया है। इन सबके बीच मुझे इस बात की भी खुशी है कि अब परिवार को लोग अवनि की वजह से पहचाने जाने लगे हैं। 2012 में महाशिवरात्रि के दिन अवनि का एक्सीडेंट हो गया था, जिससे उसे पैरालिसिस हो गया। तब वह पूरी तरह हिम्मत हार चुकी थी। अपने कमरे से भी बाहर नहीं निकलती थी, लेकिन हम सभी ने उसे हिम्मत दी। माता-पिता की महत्वपूर्ण भूमिका रही। अवनि की मेहनत का ही नतीजा है कि वह दुनियाभर में भारत नाम रोशन कर रही है।

जज बनना चाहती हैं अवनि

परिवार ने बताया कि शूटिंग में इतिहास रचने वाली अवनि लेखरा पढ़ाई में भी काफी होशियार है। परिजन ने बताया कि उसे किताबें पढ़ने का काफी शौक है। हर दिन अवनि खेल के साथ पढ़ने में भी काफी वक्त बिताती हैड्ड। अवनि के भाई अरनव ने बताया कि फिलहाल वह आरजेएस की तैयारी कर रही हैं, ताकि वह जज बन न्याय कर सके।

टोक्यो पैरालिंपिक में भारत का रिकॉर्डतोड़ प्रदर्शन

भारत ने 13 दिन में 19 मेडल जीते, इससे पहले 53 साल में 11 पैरालिंपिक में जीते

आईटीडीसी इंडिया ई-प्रेस/ आईटीडीसी न्यूज टोक्यो

टोक्यो ओलिंपिक के बाद टोक्यो पैरालिंपिक में भी भारत ने रिकॉर्ड तोड़ प्रदर्शन किया है। ओलिंपिक में भारत ने 1 गोल्ड सहित 7 मेडल जीते। यह किसी भी 1 ओलिंपिक गेम्स में भारत का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन है। हमारे पैरा एथलीट इससे भी आगे निकल गए। उन्होंने टोक्यो में हुए 16वें पैरालिंपिक गेम्स में शारीरिक खामियों पर विजय पाते हुए देश के लिए 19 मेडल जीते। इसमें 5 गोल्ड मेडल शामिल हैं। यह पैरालिंपिक में भारत का रिकॉर्डतोड़ प्रदर्शन है। भारत ने इससे पहले 53 सालों में 11 पैरालिंपिक में हिस्सा लेते हुए कुल 12 मेडल जीते थे। यानी इस इवेंट में भारत ने पिछले तमाम इवेंट में जीते मेडल की तुलना में 42त्न ज्यादा सफलता हासिल की।

सभी रंगों के मेडल का रिकॉर्ड

भारत ने इस बार सभी तरह के मेडल जीतने का भी रिकॉर्ड कायम कर दिया। इस बार भारत के नाम 5 गोल्ड रहे। इससे पहले भारत किसी भी पैरालिंपिक गेम्स में 2 से ज्यादा गोल्ड नहीं जीत पाया है। इसी तरह भारत ने टोक्यो में 8 सिल्वर जीते। भारत ने इससे पहले कुल मिलाकर 4 सिल्वर जीते थे। एक पैरालिंपिक में इससे पहले कभी 2 से ज्यादा सिल्वर नहीं आए थे। ब्रॉन्ज इस बार 6 जीते। इससे पहले कुल 4 ब्रॉन्ज जीते थे। ब्रॉन्ज भी इससे पहले किसी एक पैरालिंपिक में 2 से ज्यादा नहीं मिले थे।

अवनि से हुई थी गोल्ड की शुरुआत

पैरालिंपिक खेलों में देश के लिए सबसे पहला गोल्ड शूटिंग स्पर्धा में अवनि लेखरा ने जीता। जयपुर की अवनि ने महिलाओं की आर-2 10 मीटर एयर राइफल स्टैंडिंग स्॥1 में पहला स्थान हासिल करके गोल्ड मेडल जीता।

भारत के लिए दूसरा गोल्ड जेवलिन थ्रो में सुमित अंतिल के खाते में आया। सुमित ने जेवलिन थ्रो की स्न्न64 कैटेगरी में वर्ल्ड रिकॉर्ड के साथ गोल्ड मेडल अपने नाम किया। उन्होंने फाइनल में 68.55 मीटर के बेस्ट थ्रो के साथ मेडल जीता। तीसरा गोल्ड 19 वर्षीय शूटर मनीष नरवाल के खाते में आया। मनीष ने मिक्सड 50 मीटर स्॥1 में गोल्ड मेडल जीता। नरवाल ने फाइनल में 209.1 का स्कोर किया। वहीं दो गोल्ड बैडमिंटन में आए। प्रमोद भगत स्ड्ढ में चौथा गोल्ड जीता। वहीं स्॥6 में कृष्णा नागर ने आखिरी दिन भारत को गोल्ड दिलाया।

अब तक 8 सिल्वर आए झोली में

टोक्यो पैरालिंपिक खेलों में भारत के लिए सबसे पहला पदक गुजरात की भाविना पटेल ने जीता था। भाविनाबेन पटेल ने टेबल टेनिस के विमेंस सिंगल्स में क्लास-4 कैटेगरी में भारत को मेडल दिलाया है। फाइनल में भाविना का मुकाबला वर्ल्ड नंबर-1 चीनी खिलाड़ी झोउ यिंग से था। यिंग ने भाविना को 11-7, 11-5 और 11-6 से हरा कर गोल्ड जीता।

रवि शास्त्री कोरोना पॉजिटिव

हेड कोच समेत सपोर्ट स्टाफ के 4 मेंबर आइसोलेशन में

पर इंडिया-इंग्लैंड के बीच चौथा टेस्ट नहीं रोका गया

आईटीडीसी इंडिया ई-प्रेस/ आईटीडीसी न्यूज लंदन

भारत और इंग्लैंड के बीच ओवल टेस्ट के चौथे दिन का खेल शुरू होने से पहले एक हेड कोच रवि शास्त्री समेत भारतीय टीम के सपोर्ट स्टाफ के चार सदस्यों को आइसोलेशन में रखा गया है। खबर है कि टीम इंडिया के मुख्य कोच रवि शास्त्री कोरोना वायरस से संक्रमित पाए गए हैं।

सभी का हुआ RT-PCR टेस्ट:- बीसीसीआई ने एक प्रेस रिलीज जारी कर कहा- हेड कोच रवि शास्त्री, गेंदबाजी कोच भरत अरूण, फील्डिंग कोच आर श्रीधर और फिजियोथेरेपिस्ट नितिन पटेल को आइसोलेशन में रखा गया है। सभी का ऋञ्ज-क्कष्टक्र परीक्षण हुआ है और वे टीम होटल में रहेंगे और टीम इंडिया के साथ तब तक यात्रा नहीं करेंगे जब तक कि मेडिकल टीम से पुष्टि नहीं हो जाती। बीसीसीआई ने बयान में आगे कहा- टीम इंडिया के बाकी सदस्यों के भी दो फ्लो टेस्ट किए गए- एक बीती रात को और एक सुबह। जिन सदस्यों का टेस्ट निगेटिव आया है उनको ओवल में खेले जा रहे चौथे टेस्ट मैच के चौथे दिन मैदान पर जाने की मंजूरी दी है।

भारत के सुहास अथिराज टोक्यो, जापान में टोक्यो 2020 पैरालंपिक खेलों में पुरुष एकल एसयू4 स्वर्ण पदक बैडमिंटन मैच के दौरान फ्रांस के लुकास मज़ूर के खिलाफ प्रतिस्पर्धा करते हैं।

SUPER HERO
यदि आप
किसी भी व्यक्ति को जानते हैं
जिसने, सामाजिक सरोकार में
असाधारण प्रदर्शन किया हो,
वह व्यक्ति आप स्वयं भी हो सकते हैं,
दोनों स्थिति में हमें पूर्ण विवरण, भेजें।
हम देश के असली नायक
SUPER HERO MP 2021
SUPER HERO IND 2021
खोज रहे हैं, उन्हें समाज, राष्ट्र के सामने लाना और
सम्मान दिलवाना, आपका-हमारा संयुक्त प्रयास रहेगा।
Contact: Editorial Desk (Lifestyle),
ITDC News, 9826 220022
Email: responseitdc@gmail.com
PRESS ITDC
ITDC NEWS

बैडमिंटन में आखिरी दिन दो मेडल; कृष्णा नागर ने भारत को 5वां गोल्ड दिलाया, नोएडा के डीएम सुहास ने सिल्वर जीता

आईटीडीसी इंडिया ई-प्रेस/ आईटीडीसी न्यूज नई दिल्ली

भारत ने टोक्यो पैरालिंपिक में 19 मेडल जीते। रविवार को आखिरी दिन बैडमिंटन में दो मेडल और मिले। कृष्णा नागर ने भारत को 5वां गोल्ड दिलाया। वहीं नोएडा के डीएम सुहास यथिराज ने सिल्वर मेडल जीता। बैडमिंटन के मिक्स्ड डबल्स में पलक कोहली और प्रमोद भगत की जोड़ी को फुजिहारा और सुगीनो की जोड़ी से हार का सामना करना पड़ा। इसके अलावा व्हीलचेयर के 50 मीटर मिस्क्ड एयर राइफल में अवनि लेखरा, दीपक और सिद्धार्थ बाबू भी मेडल की दौड़ से बाहर हो गए।

कृष्णा ने फाइनल में हांगकांग के चू मान कई को हराया:- कृष्णा नागर ने फाइनल में हांगकांग के चू मान केई को हराया। पहला गेम कृष्णा ने 21-17 से जीता। दूसरे गेम में केई ने वापसी की और 16-21 से जीते। वहीं तीसरे और निर्णायक गेम को कृष्णा ने 21-17 से जीत कर गोल्ड पर कब्जा जमा लिया। उन्होंने यह मेडल स्॥-6 कैटेगरी में जीता। स्॥-6 कैटेगरी में वैसे खिलाड़ी हिस्सा लेते हैं, जिनकी लंबाई नहीं बढ़ती।

13 किमी ट्रेनिंग के लिए जाते थे कृष्णा

कृष्णा ट्रेनिंग करने के लिए रोजाना 13 किमी की दूरी तय कर स्टेडियम जाते थे। कृष्णा की उम्र 2 साल थी, तब उनकी बीमारी के बारे में परिवार वालों को पता चला। नोएडा के डीएम सुहास यथिराज को फाइनल मुकाबले में फ्रांस के खिलाड़ी लुकास मजूर ने हराया। यह मुकाबला 3 गेम तक चला। सुहास ने पहला गेम 21-15 से जीता और इसके बाद दोनों गेम वो कड़े मुकाबले में हार गए। लुकास मजूर ने आखिरी दोनों गेम 21-15, 17-21 से जीता। सुहास ने यह मेडल एसएल-4 कैटगरी में जीता। एसएल-4 में वे पैरा एथलीट शामिल होते हैं, जिन्हें चलने-दौड़ने में थोड़ी परेशानी होती है।

पीएम ने दी बधाई

प्रधानमंत्री ने डीएम सुहास की जीत को खेल और प्रशासन का बेहतर मेल बताया। उन्होंने सोशल मीडिया पोस्ट पर लिखा। आपने अपने खेल से सबका दिल जीत लिया। सिल्वर मेडल जीतने पर बधाई। अब भारत के टोक्यो में 19 मेडल हो चुके हैं। अब तक 53 साल में 11 पैरालिंपिक्स में 12 मेडल आए। 1960 से पैरालिंपिक हो रहा है। भारत 1968 से पैरालिंपिक में भाग ले रहा है। वहीं 1976 और 1980 में भारत ने भाग नहीं लिया था। टोक्यो में अब तक 5 गोल्ड, 8 सिल्वर और 6 ब्रॉन्ज मेडल मिले हैं।

न्यूज़ ब्रीफ

एफपीआई ने अगस्त में भारतीय बाजारों में डाले 16,459 करोड़

नई दिल्ली। विदेशी पोर्टफोलियो निवेशकों (एफपीआई) ने अगस्त में भारतीय बाजारों में शुद्ध रूप से 16,459 करोड़ रुपए का निवेश किया। इस दौरान एफपीआई ने मुख्य रूप से ऋण या बांड बाजार में निवेश किया। डिपॉजिटरी के आंकड़ों के अनुसार, दो से 31 अगस्त के दौरान एफपीआई ने शेयरों में मात्र 2,082.94 करोड़ रुपए डाले। हालांकि, इस दौरान बांड बाजार में उनका निवेश 14,376.2 करोड़ रुपए रहा। चालू कैलेंडर साल में ऋण या बांड बाजार में यह एफपीआई के निवेश का सबसे ऊंचा आंकड़ा है। जियोजीत फाइनेंशियल सर्विसेज के मुख्य निवेश रणनीतिकार वी के विजयकुमार ने कहा, ''एफपीआई द्वारा बांड बाजार में निवेश की प्रमुख वजह यह है कि अमेरिका और भारत में बांड पर प्राप्तियों में काफी अंतर है। अमेरिका में 10 साल के बांड पर प्राप्ति 1.30 प्रतिशत से कम है, जबकि भारत में यह 6.2 प्रतिशत से ऊपर है। इसके अलावा रुपए में स्थिरता से हेजिंग की लागत कम हुई है। विनिमय दरों को एफपीआई आशान्वित हैं।%% उन्होंने कहा कि अगस्त में एफपीआई शेयर बाजारों में वापस लौटे हैं। बाजार में तेजी है और वे इस अवसर का लाभ गंवाना नहीं चाहते। इसके अलावा वैश्विक परिदृश्य भी अनुकूल है। फेडरल रिजर्व ने संकेत दिया है कि ब्याज दरों में बढ़ोतरी अभी दूर है। इससे पहले एफपीआई ने जुलाई में भारतीय बाजारों से शुद्ध रूप से 7,273 करोड़ रुपए की निकासी की थी। वहीं सितंबर के पहले तीन कारोबारी सत्रों में एफपीआई ने शेयर और बांड बाजार में कुल मिलाकर 7,768.32 करोड़ रुपए डाले हैं। कोटक सिक्योरिटीज के कार्यकारी उपाध्यक्ष इक्विटी तकनीकी शोध श्रीकांत चौहान ने कहा कि टीकाकरण में तेजी, जुलाई के जीएसटी के बेहतर आंकड़ों, वस्तुओं के व्यापार में बढ़ोतरी से बाजार की धारणा को मदद मिली है। हालांकि, अगस्त का पीएमआई आंकड़ा कमजोर पड़ा है।

चालू वित्त वर्ष में अबतक 3,385 किमी राष्ट्रीय राजमार्ग का निर्माण हुआ

नई दिल्ली। केंद्रीय सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय ने शनिवार को कहा कि मंत्रालय ने चालू वित्त वर्ष 2021-22 में अब तक 3,385.02 किलोमीटर राष्ट्रीय राजमार्गों का निर्माण किया है। मंत्रालय ने बताया कि निर्माण की गति प्रतिदिन 21.8 किमी थी, और यह गति कोविड-19 महामारी और बारिश के मौसम के बावजूद हासिल की गयी। उसने ट्विटर पर लिखा, चालू वित्त वर्ष 2021-22 (दो सितंबर तक) में 3,385.02 किलोमीटर राष्ट्रीय राजमार्ग का निर्माण किया, जबकि इस अवधि में उसने 3,068.26 किलोमीटर की राष्ट्रीय राजमार्ग परियोजनाओं का ठेका दिया। प्रतिदिन 21.8 किमी राजमार्गों का निर्माण किया गया।

रोजगार पर एसबीआई की रिपोर्ट

फाइनेंशियल ईयर 2021-22 में 50 लाख लोगों को रोजगार मिलने की उम्मीद

» अगस्त में 15 लाख लोगों ने नौकरी गंवाई

आईटीडीसी इंडिया ई-प्रेस/ आईटीडीसी न्यूज नई दिल्ली

देश में धीरे-धीरे अर्थव्यवस्था की हालत में सुधार हो रहा है। अप्रैल से जून के दौरान देश की त्नष्ठक्क में 20.1त्न की तेजी देखी गई है। इससे रोजगार सृजन में भी थोड़ा फायदा मिला है। फाइनेंशियल ईयर 2021-22 में 50 लाख लोगों को रोजगार मिलने की उम्मीद है। ये अनुमान देश के सबसे बड़े सरकारी बैंक स्टेट बैंक ऑफ इंडिया अपनी एक रिपोर्ट में लगाया है।

2021-22 में श्रम बाजार की गतिविधियां सुधरेंगी

SBI के इकॉनोमिस्ट्स का मानना है कि 2021-22 में श्रम बाजार की गतिविधियां सुधरेंगी और महामारी के बीच कंपनियां नियुक्तियों को बढ़ा सकती हैं। अर्थशास्त्रियों ने EPFO और NPS के नियमित तौर पर जारी मासिक वेतन रजिस्टर आंकड़े का भी जिक्र किया।

अगस्त में 15 लाख लोगों ने नौकरियां गंवाई

सेंटर फॉर मॉनिटरिंग इंडियन इकोनॉमी के मुताबिक अगस्त महीने में 15 लाख लोगों ने नौकरी गंवाई हैं। इसमें 13 लाख नौकरियां ग्रामीण क्षेत्रों में लोगों ने गंवाई हैं। रोजगार को लेकर यह उम्मीद ऐसे समय में जताई गई है, जब दूसरी महामारी के बाद बेरोजगारों की संख्या बढ़ने और अर्थव्यवस्था में श्रम भागीदारी में कमी को लेकर चिंता जताई जा रही है।

अप्रैल से जून के दौरान 16.3 लाख नई नौकरियां

इकॉनोमिस्ट एसके घोष ने जानकारी दी कि किसी क्षेत्र को संगठित रूप देने की दर 10त्न है। वहीं कुल नियमित रोजगार (पेरोल) में नई नौकरी का अनुपात 50% है। SBI के इकॉनोमिस्ट्स की रिपोर्ट की माने तो अप्रैल से जून के दौरान 30.74 करोड़ नियमित रोजगार के नए अवसर मिले हैं। इसमें 16.3 लाख नई नौकरियां थीं, जो पहली बार EPFO और NPS से जुड़ीं है।

EPFO सब्सक्राइबर्स बढ़े

SBI की रिपोर्ट में बताया गया है कि अगर नई नौकरियों में यही तेजी रही है तो 2021-22 में ये आंकड़ा 50 लाख के पार कर सकता है। जबकि ये 2020-21 में ये आंकड़ा 44 लाख था। रिपोर्ट में कहा गया है कि EPFO में शुद्ध रूप से अंशधारकों की संख्या फाइनेंशियल ईयर 2021-22 की पहली तिमाही में बढ़ी है।

टॉप 9 कंपनियों का बाजार पूंजीकरण 2.93 लाख करोड़ रुपए बढ़ा

आईटीडीसी इंडिया ई-प्रेस/ आईटीडीसी न्यूज नई दिल्ली

बिजनेस डेस्क: सेंसेक्स की शीर्ष 10 में से नौ कंपनियों के बाजार पूंजीकरण (मार्केट कैप) में बीते सप्ताह 2,93,804.34 करोड़ रुपए की बढ़ोतरी हुई। इस दौरान शेयर बाजारों ने नया रिकॉर्ड बनाया। समीक्षाधीन सप्ताह में सबसे अधिक लाभ में रिलायंस इंडस्ट्रीज रही। वहीं शीर्ष 10 में इन्फोसिस एकमात्र कंपनी रही जिसके बाजार मूल्यांकन में गिरावट आई। सप्ताह के दौरान बीएसई का 30 शेयरों वाला सेंसेक्स 2,005.23 अंक या 3.57 प्रतिशत चढ़ गया। शुक्रवार को सेंसेक्स पहली बार 58,000

अंक के स्तर के पार बंद हुआ। सिर्फ तीन कारोबारी सत्रों में सेंसेक्स 57,000 से 58,000 अंक पर पहुंचा है। एक माह में सेंसेक्स नौ प्रतिशत चढ़ा है। समीक्षाधीन सप्ताह में रिलायंस इंडस्ट्रीज का बाजार पूंजीकरण 1,02,382 करोड़ रुपए बढ़कर 15,14,017.50 करोड़ रुपए पर पहुंच गया। शुक्रवार को रिलायंस इंडस्ट्रीज का बाजार मूल्यांकन रिकॉर्ड 15 लाख करोड़ रुपए के आंकड़े पर पहुंचा। रिलायंस यह उपलब्धि हासिल करने वाली पहली घरेलू कंपनी बन गई है। इस दौरान टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज (टीसीएस) का बाजार पूंजीकरण 44,832.5 करोड़ रुपए के उछाल से 14,20,935.10 करोड़ रुपए पर पहुंच गया। भारती एयरटेल की बाजार हैसियत 35,342.16 करोड़ रुपए की बढ़ोतरी के साथ 3,61,540.16 करोड़ रुपए पर और बजाज फाइनेंस की 33,906.91 करोड़ रुपए की वृद्धि के साथ 4,54,207.76 करोड़ रुपए पर पहुंच गई। हिंदुस्तान यूनिलीवर के बाजार पूंजीकरण में 20,712.29 करोड़ रुपए की बढ़ोतरी हुई और यह 6,49,943.93 करोड़ रुपए रहा। आईसीआईसीआई बैंक का बाजार मूल्यांकन 17,373.55 करोड़ रुपए की बढ़ोतरी के साथ 5,02,232.46 करोड़ रुपए पर पहुंच गया। सप्ताह के दौरान भारतीय स्टेट बैंक (एसबीआई) की बाजार हैसियत 17,001.38 करोड़ रुपए बढ़कर 3,85,007.74 करोड़ रुपए पर पहुंच गई। एचडीएफसी बैंक का मूल्यांकन 14,954.74 करोड़ रुपए के उछाल के साथ 8,72,362.42 करोड़ रुपए पर और एचडीएफसी का 7,298.81 करोड़ रुपए की बढ़त के साथ 4,98,290.05 करोड़ रुपए पर पहुंच गया।

आर के सिंह ने बिजली संयंत्रों के लिए कोयले की आपूर्ति बढ़ाने को कहा

नई दिल्ली। बिजली मंत्री आर के सिंह ने देश में बिजली की बढ़ती मांग को देखते हुए ताप विद्युत परियोजनाओं के लिए कोयले की आपूर्ति बढ़ाने को कहा है। शनिवार को एक आधिकारिक विज्ञप्ति में यह जानकारी दी गई। विज्ञप्ति में कहा गया कि बिजली संयंत्रों में कोयले के भंडार की बारीकी से निगरानी के लिए एक कोर प्रबंधन टीम (सीएमटी) का गठन किया गया है। बिजली सचिव आलोक कुमार टीम द्वारा की जा रही कार्रवाई के साथ-साथ रोजाना स्थिति की समीक्षा कर रहे हैं। इसमें कहा गया, बिजली की बढ़ती मांग को देखते हुए केंद्रीय बिजली, नवीन और नवीकरणीय ऊर्जा मंत्री आर के सिंह ने तीन सितंबर, 2021 को बिजली संयंत्रों की कोयले की स्थिति की समीक्षा की।

RSS ने इनकम टैक्स पोर्टल की खामियों के लिए ठहराया इंफोसिस को जिम्मेदार

आईटीडीसी इंडिया ई-प्रेस/ आईटीडीसी न्यूज मुंबई

इनकम टैक्स पोर्टल पर गड़बड़ियों को लेकर आर.एस.एस. से जुड़ी पत्रिका पांचजन्य ने सॉफ्टवेयर कंपनी इंफोसिस पर तीखा हमला बोला है। माल और सेवा कर (जी.एस.टी.) पोर्टल को बेंगलुरु स्थित दुनिया की जानी-मानी कंपनी इंफोसिस ने तैयार किया है। इसकी गड़बड़ियों को लेकर पांचजन्य ने कवर पेज पर एक स्टोरी की है जिस साख और अघात हैडिंग दिया गया है। पांचजन्य ने लिखा कि इसकी गड़बड़ी से सरकार और उसकी कर संग्रह प्रणाली में विश्वास कम हो गया है। सरकार ने जानी-मानी सॉफ्टवेयर कंपनी को व्यवस्था सरल बनाने का ठेका दिया, लेकिन उसने मामले को उलझा दिया है। इसमें सवाल पूछा गया कि क्या इंफोसिस अपने विदेशी ग्राहकों के लिए इसी तरह की घटिया सेवा प्रदान करेगी? बता दें कि इनकम टैक्स की नई वेबसाइट में आ रही दिक्कतों को लेकर इन्फोसिस के सी.ई.ओ. और एम.डी. सलिल पारेख कुछ दिन पहले वित्त मंत्रालय में पेश हुए थे। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने उन्हें नया ई-फाइलिंग पोर्टल शुरू होने के बाद आ रही दिक्कतों और करीब 2.5 महीने बाद भी पोर्टल की गड़बड़ियों का समाधान नहीं किए जाने पर नोटिस भेजकर बुलाया था। वित्त मंत्री ने इंफोसिस के एमडी सलिल पारेख के साथ हुई मीटिंग में सरकार और करदाताओं की गहरी निराशा से अवगत कराया और चिंता जताई थी। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने कहा था कि ई-फाइलिंग पोर्टल की वर्तमान कार्यक्षमता पर करदाताओं के सामने आने वाली दिक्कतों को 15 सितंबर, 2021 तक टीम द्वारा हल किया जाना चाहिए।

PRESS
ITDC NEWS
www.itdcindia.com

मध्य भारत से विश्वसनीय हिन्दी दैनिक समाचारपत्र
आईटीडीसी न्यूज़,

विश्वसनीयता की अपेक्षा पर खरा बनाने के लिए हम निरंतर कार्य कर रहे है,
प्रति सप्ताह आप सभी का स्वागत

मेरे लोग, मेरा विधान

इसके तहत हम आप सभी से अनुरोध कर रहे हैं कि
विश्लेषणात्मक रचनाएं, जनसामान्य हित में
नई जानकारियां, लेख, आलेख, टीका, विवेचना, समाचार, रोचक तथ्य,
नए प्रयास, अभिनव प्रयोग के रूप में हमें प्रेषित करें।

आपकी रचना, नाम, चित्र सहित, अधिकाधिक पाठकों तक पहुंचे,
इसके लिए हम, समाचार पत्र में प्रकाशित रचनाओं को,
देश के सभी प्रचलित सोशल मीडिया स्टैंड जैसे फेसबुक, लिंकेडीन, यूट्यूब, जीटॉक, ट्विटर, इंस्टाग्राम
व्हाट्सएप्प एवं हमारे डिजिटल स्टैंड से प्रचार-प्रसार भी देंगे।
(दीर्घ समय तक https://www.itdcindia.com/saga-news.php पर भी उपलब्ध)
जिससे लाभान्वित जनों की संख्या निरंतर बढ़ती रहे।

आप सभी इच्छुकजन अपनी गैरमानदेय,
अपठित, नवीन, मूल एवं मौलिक रचना, हिन्दी में हमें प्रेषित करें।
(और अंग्रेजी में भेजने पर केवल हमारे डिजिटल स्टैंड पर ही प्रकाशन होगा)
उक्त हेतु, आपका चित्र, नाम, शहर, मोबाइल न, आपकी रचना, मेल करें-ईमेल
itdcnewsmp@gmail.com

इंटीग्रेटेड ट्रेड डेव्हेलपमेंट सेंटर न्यूज़

म्यूचुअल फंड में निवेश से पहले इन बातों का रखें ध्यान, नहीं तो उठाना पड़ सकता है नुकसान

आईटीडीसी इंडिया ई-प्रेस/ आईटीडीसी न्यूज नई दिल्ली

बीते कुछ समय में म्यूचुअल फंड ने अच्छा रिटर्न दिया है। इसके चलते निवेशकों में इसकी लोकप्रियता तेजी से बढ़ रही है। ऐसे में अगर आप भी म्यूचुअल फंड में निवेश करने का प्लान बना रहे हैं तो इससे पहले कुछ बातों को समझना आपके लिए बहुत जरूरी है। पर्सनल फाइनेंस एक्सपर्ट और ऑप्टिमा मनी मैनेजर्स के संस्थापक व CEO पंकज मठपाल आपको बता रहे हैं कि म्यूचुअल फंड में निवेश करने और बेहतर रिटर्न पाने के लिए आपको कुछ महत्वपूर्ण बातों का ध्यान रखना चाहिए।

तय करें कि पैसा कहां लगाना है

निवेशक को सबसे पहले निवेश सूची तैयार कर लेनी चाहिए कि उसे कहां और कितने पैसे निवेश करने हैं। इस प्रक्रिया को असेट एलोकेशन कहते हैं। असेट एलोकेशन वो तरीका है जो यह तय करता है कि आप अपने पैसे को विभिन्न निवेशों में कैसे लगाएं जिसमें सम्पत्ति के सभी वर्गों का सही मिश्रण हो। असेट एलोकेशन के कुछ नियम हैं जो आपको यह बताते हैं कि किस उम्र में कितना

धन जुटाना है। उदाहरण के लिए- यदि किसी निवेशक की उम्र 25 साल है तो उसे अपने निवेश का 25% डेट इंस्ट्रूमेंट और बाकि इक्विटी में लगाना चाहिए। यह एक सामान्य नियम है किंतु हर निवेशक की जोखिम सहने की क्षमता अलग हो सकती है और परिस्थितियों के अनुसार बदल भी सकती है। वास्तविकता यह है कि हर व्यक्ति की परिस्थितियां और फाइनेंशियल कंडीशन अलग-अलग होती हैं। असेट एलोकेशन को समझने के लिए आपको जैसे-उम्र, व्यवसाय और आप पर निर्भर परिवार के सदस्यों की संख्या आदि की जानकारी होनी चाहिए।

सही फंड चुनें

आप वही फंड चुनें जो आपकी जरूरतों के लिए उपयुक्त हो। इसके लिए सबसे पहले आपका आर्थिक लक्ष्य तय करें। उसी के हिसाब से निवेश करें। निवेश करने के पहले आपको तय कर लेना चाहिए कि किस फंड में निवेश करना है। सभी तरह के फंड निवेश के लिए अच्छे होते हैं। इनके बारे में जानकारी रखना जरूरी होता है।

पोर्टफोलियो में विविधता जरूरी

एक पोर्टफोलियो में कई असेट क्लास शामिल करना चाहिए। विविधता आपको किसी निवेश के खराब प्रदर्शन के दुष्प्रभाव से बचाती है। कभी-कभी किसी कंपनी या सेक्टर का प्रदर्शन बाकी बाजार की तुलना में ज्यादा खराब होता है। ऐसी स्थिति में अगर आपका पूरा पैसा उसी में नहीं लगा हो, तो निश्चित रूप से यह आपके लिए मददगार होता है। हालांकि ज्यादा तरह के फंडों में निवेश करना भी सही नहीं है।

इंटीग्रेटेड ट्रेड डेव्हेलपमेंट सेंटर न्यूज़ के लिए मालिक, मुद्रक एवं प्रकाशक राधिका वीरेंद्र, स्वामी- इंटीग्रेटेड ट्रेड डेव्हेलपमेंट सेंटर इंडिया ईप्रेस द्वारा साई प्रिंटर्स, 91, जहांगीराबाद, भोपाल से मुद्रित करवाकर, श्री परिसर, 23 पश्चिम निशातपुरा, डीआईजी बंगला, भोपाल से प्रकाशित। संपादक- राधिका वीरेंद्र आरएनआई क्र. MPHIN/2018/77221, 0755-4223334 पीआरबी एक्ट के तहत समाचार चयन के लिए जिम्मेदार।